

नेपाल राजकीय, पञ्चाङ्ग निर्णायक समिति निर्णीत गणित व्रतपर्वादि सहितम् ।  
नवरामाभ्रनेत्र २०३६ मितविक्रमाब्दस्य नेपालदेशीयं हिमाल पञ्चाङ्गम्

राजा-शुकः  
श्रीशालिवाहनीयशकः १९०४  
ईसवीय सन् १९८२-८३

'युवा' नाम संवत्सरः ९

यो पञ्चाङ्ग जन्म, वर्ष, पत्रिका, चिन्ता पत्रिका,  
पुस्तक आयुर्वेदीय औषधि ई सवै प्राप्ति स्थान—



पञ्चाङ्गकर्ता—पं० प्राणनाथ त्रिपाठी-  
परमेश त्रिपाठी सि. ज्यो. आचार्य  
पोखरा—अर्घौं कालिका गा. पं.  
(नेपाल)



मन्त्री-भौमः  
श्रीनेपालदेशीय संवत् ११०२-११०३

श्रीसर्गताब्दाः ५०८३

पञ्चाङ्गस्थापिताब्दाः २९

यो वर्षमा आश्विन संसर्प मलमास फाल्गुन  
प्राकृत मलमास पौष क्षयमास परेका-  
लेतिनै मास शुभकार्यमा त्यज्य छन्

पोखरा अर्घौं कालिका गा. पं. तिरामि पं० प्राणनाथ त्रिपाठीजर्मणा-प्रकाशितम्

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो. | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगा:    | चक्ररा. | दि. | सा. | सु. | ज. | ता. |    |
|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|-----|----|----|-----|----|----|----------|---------|-----|-----|-----|----|-----|----|
| ३१ | मं. | ५   | ४० | ५३ | ज्ये. | ४१ | ३८ | व.  | ४२ | ३० | को. | ८  | ११ | मृदुगर   | ४१      | ३८  | ३१  | ३४  | ५  | ४१  | १३ |
| १  | वृ. | ६   | ४६ | ५  | गृ.   | ४८ | १५ | प.  | ४४ | ७  | ग.  | १३ | २१ | ध्वज     | घ.      | ३१  | ३८  | ५   | ४० | १४  |    |
| २  | वृ. | ७   | ५० | ५८ | पु.   | ५४ | ३० | शि. | ४५ | २० | भा. | १८ | ३१ | घाता     | घ.      | ३१  | ४२  | ५   | ४० | १५  |    |
| ३  | शु. | ८   | ५५ | ७  | ज.    | ५९ | ५९ | नि. | ४६ | १३ | वा. | २३ | २  | आनन्द    | १०      | ५२  | ३१  | ४६  | ५  | ३९  | १६ |
| ४  | शु. | ९   | ५८ | १७ | श.    | ६० | ०  | सा. | ४६ | १५ | तै. | २६ | ४२ | चर       | म.      | ३१  | ५०  | ५   | ३८ | १७  |    |
| ५  | आ.  | १०  | ६० | ०  | श.    | ४  | ३६ | शु. | ४५ | २७ | क.  | २९ | १६ | गद       | ३६      | १९  | ३१  | ५५  | ५  | ३७  | १८ |
| ६  | तो. | १०  | ०  | १६ | घ.    | ८  | २  | गु. | ४३ | ३८ | व.  | ३० | ३८ | शुभ      | कुं.    | ३१  | ५९  | ५   | ३६ | १९  |    |
| ७  | मं. | ११  | १  | ०  | श.    | १० | ९  | व.  | ४० | ५० | को. | ३० | ४२ | मृगु     | ५५      | ४९  | ३२  | ३   | ५  | ३६  | २० |
| ८  | वृ. | १२  | ४८ | ३३ | गृ.   | ११ | ४  | ऐ.  | ३७ | ५  | ग.  | २९ | ३१ | पक्ष     | मी.     | ३२  | ७   | ५   | ३५ | २१  |    |
| ९  | वृ. | १४  | ५४ | ४५ | ज.    | १० | ४९ | वै. | ३२ | २५ | भा. | २७ | ११ | छत्र     | मी.     | ३२  | ११  | ५   | ३४ | २२  |    |
| १० | शु. | ३०  | ५१ | ५१ | शे.   | ९  | ३० | वि. | २६ | ५२ | च   | २३ | ४८ | श्रीवत्स | १३      | ३०  | ३२  | ४४  | ५  | ३३  | २३ |

आश्विन्यां १ मेघेच्चारकः ५२।१२ भ.पु.विश्वध्वजोत्थानम्  
 भ. ४६।५ उ. (वैशाख) संक्रांति (भक्त पुरे विश्व-  
 भ. १८।३१ या. उफायां ३ भौमः ७ टामीमध्य ८  
 अष्टमी व्रतं पश्चिमोदितोबुधः १९ भ.पु.श्रीरत्नाग्नियान्ना  
 भरण्यां बुधः ५६ a ध्वजोत्पातनम्) नव वर्षारम्भः b  
 भ. २९।१६ उ. घ. प- प्रवृत्तिः ३६।१९ भ.पु. भैरवमद्रद  
 भ. ०।१६ या. उभाया. शुक्रः २४ दकालीयात्रा  
 त्रिपुस्करः १०।९ उ. वर्षाधिनी ११ व्रतं वृषेसायनार्कः २६  
 भ. ५८।३८ उ. प्रदोष व्रतम् c पुरेवालकुमारी यात्रा  
 भ. २७।११ या. (मानातिचह्ने) bखायुसह  
 दशश्राद्धमातृ तीर्थ स्नानम् घ. प- निवृत्तिः १।३०

| र.   | सु. | म. | बु. | गु. | शु. | श. | रा. |
|------|-----|----|-----|-----|-----|----|-----|
| प्र. | ०   | ५  | ०   | ६   | १०  | ५  |     |
| ७    |     | ५  | १८  | १४  | २१  | २४ |     |
| म.   | ५   | २१ | १७  | २०  | ३७  | ५  | ४   |
| अ.   | ३   | ३१ | २८  | ४६  | २   | ३२ |     |
| ५    | २   | १४ | १०  | १   | ६   | ५  |     |
| अ.   | २   | १२ | १२  | २१  | ४४  | ०  | १   |

|       |           |    |
|-------|-----------|----|
| २     | १२        | ११ |
| रा. ३ | १ मू. बु. | ११ |
| ४     | १०        | ११ |
| ५     | ७ बु.     | ११ |
| ५     | १०        | ११ |

३१ सू. १, मं. व. उ, वृ.  
मा. ३ उ. वृ. व. उ, शु. मा.  
उ. प. श. व. उ.

|                           |                    |                           |
|---------------------------|--------------------|---------------------------|
| मेघविषुवचक्रम्            | फलञ्चोभयोः         | तुलाविषुवचक्रम्           |
| ह. वि. स्वा. वि. अज्येसू. | शीर्ष-भूलाभः       | अ. म. पू. उ. ह. वि. स्वा. |
| म. पू. उ.                 | मुखे-पाण्डित्यम्   | आ. पु. ति.                |
| मृ. आ. पु. ति. अ.         | हृदि-धनागमम्       | अ. भ. कृ. रो. मृ.         |
| भ. कृ. रो.                | दक्षकरे-स्त्रीलाभः | पू. उ. रे.                |
| उ. रे. अ.                 | वामकरे-भैक्ष्यम्   | श्र. ध. श.                |
| ध. श. पू.                 | दक्षपादे-भ्रमणम्   | मू. पू. उ.                |
| पू. उ. श्र.               | वामपादे-कष्टम्     | वि. अ. ज्ये.              |

[illegible]



श्री शके १६०४ श्री संवत् २०३९ वैशाख शुक्ल पक्षः (वृषलेश्वर) पा० आश्वि. आ. पु. म. पूफा. चि. (अप्रैल ४ मई५) उत्तरायण-वसन्ततुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.   | घ. | प. | यो.   | घ. | प. | क.  | ख. | प. | योगः   | जन्मरा. | वि. | मा. | सु. | उ. | ता. |    |
|----|-----|-----|----|----|------|----|----|-------|----|----|-----|----|----|--------|---------|-----|-----|-----|----|-----|----|
| ११ | श.  | १   | ४७ | ११ | अ.   | ७  | १५ | प्रो. | २० | ३९ | कि. | १९ | ३३ | सौम्य  | म.      | ३२  | १७  | ५   | ३३ | २४  |    |
| १२ | आ.  | २   | ४१ | ५३ | भ.   | ४  | १३ | आ.    | १३ | ५० | वा. | १४ | ३४ | काल    | १८      | १९  | ३२  | २१  | ५  | ३२  | २५ |
| १३ | सो. | ३   | ३६ | ६  | कु.  | ३  | १० | सो.   | १८ | ५९ | तै. | ९  | ०  | स्थिर  | वृ.     | ३२  | २४  | ५   | ३१ | २६  |    |
| १४ | मं. | ४   | ३० | ५  | मू.  | ५  | २३ | अ.    | ५१ | २१ | व.  | ६  | ३  | रक्ष   | २४      | ३७  | ३२  | २७  | ५  | ३१  | २७ |
| १५ | बु. | ५   | २३ | ५९ | आ.   | ४८ | २७ | सु.   | ४३ | ४१ | कौ. | ५१ | २  | मुसल   | मि.     | ३२  | ३०  | ५   | ३० | २८  | २८ |
| १६ | वृ. | ६   | १८ | ४  | पु.  | ४४ | ३७ | घृ.   | ३६ | १४ | ग.  | ४५ | १८ | सिद्धि | ३०      | ३४  | ३२  | ३३  | ५  | ३०  | २९ |
| १७ | शु. | ७   | १२ | ३१ | ति.  | ४१ | ३२ | शु.   | २९ | १० | भ.  | ४० | ०  | उत्पात | क.      | ३२  | ३६  | ५   | २९ | ३०  | ३० |
| १८ | श.  | ८   | ७  | २९ | अ.   | ३८ | २८ | ग.    | २२ | ३४ | वा. | ३५ | २० | मानस   | ३८      | ३८  | ३२  | ३९  | ५  | २८  | ३१ |
| १९ | आ.  | ९   | ०  | २६ | म.   | ३६ | २३ | वृ.   | १६ | ३४ | तै. | ३१ | २७ | मुद्गर | सि.     | ३२  | ४३  | ५   | २८ | ३२  | ३२ |
| २० | सो. | १०  | ५७ | २१ | पु.  | ३५ | २२ | शु.   | ११ | २१ | व.  | २८ | ३२ | ध्वज   | ५०      | ३४  | ३२  | ४६  | ५  | २७  | ३३ |
| २१ | मं. | ११  | ५६ | ९  | उ.   | ३५ | ४१ | व्या  | ६  | ५९ | व.  | २६ | ४५ | घाता   | कं.     | ३२  | ४९  | ५   | २६ | ३४  | ३४ |
| २२ | बु. | १२  | ५६ | १२ | ह.   | ३७ | २८ | ह.    | ५  | ४४ | कौ. | २६ | १० | आनन्द  | कं.     | ३२  | ५२  | ५   | २६ | ३५  | ३५ |
| २३ | वृ. | १३  | ५७ | ३२ | चि.  | ३९ | ३९ | व.    | २६ | ५२ | ग.  | २६ | ५२ | चर     | ८       | २०  | ३२  | ५५  | ५  | २५  | ३६ |
| २४ | शु. | १४  | ५० | ०  | स्वा | ४३ | २७ | व्य.  | ५९ | १९ | म.  | २८ | ४८ | गद     | तु.     | ३२  | ५८  | ५   | २४ | ३७  | ३७ |
| २५ | श.  | १५  | ०  | ६  | वि.  | ४८ | २३ | व.    | ५९ | ४१ | वा. | ३१ | ५४ | शुभ    | ३२      | ५९  | ३३  | १   | ५  | २४  | ३८ |

८१ राहुः पू.३ के.५९।४० स्वात्यां २ गु.१४  
 श्रीमत्स्येन्द्रनाथ रथारोहणम् (वृं गया)  
 चन्द्रोदयः विपु. ४।१३ उ. ४१।५४ या.  
 अ. ३ धर्मवटादिदानम्, त्रै. यु. परशु-ज., यु. आ. कु. बु. २  
 भ. ३।६ उ. ३०।६ या. मङ्गल ४ भरण्यां रविः ३३, श्रीम-८  
 श्रीशङ्कराचार्य जयन्ती, वृ. बु. १३।८ मी. शु. २६।४०  
 श्रीगङ्गोत्पत्तिः ७. ८. स्येन्द्रनाथ रथयात्रा, पुन-८  
 भ. १२।३१ उ. ४०।० या. जयन्ती उ. शु. २५  
 अ. व. (म. ५ ता. ३१) श्रीपशुपतेदमनार्पणम् श्री सीताम्  
 ४ वन्दिकापुरे श्रीचण्डेश्वरी रथयात्रा गौतम बुद्ध जयन्ती  
 भ. २८।३२ उ. ५७।२१ या. स्मार्तानां मोहिनी ११ ब.  
 वैष्णवानां ११ व्रतम् त्रिपुष्करः ३५।४१ या.  
 प्रदोष व्रतम् रोहिण्यां बुधः ४२  
 भ. ५७।३२ उ. श्री नृसिंह जयन्ती  
 भ. २८।४८ या. पूर्णिमा व. कूर्म ज.,  
 चण्डी १५ वैशाखस्नान समाप्तिः (स्वावापुन्ही) ४

| ३  | सु. | म. | वृ. | वृ. | शु. | वा. | रा. |
|----|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १४ | ०   | ५  | ०   | ६   | १०  | ५   | २   |
| १५ | १३  | ४  | २९  | १३  | २९  | २४  | २३  |
| १६ | २९  | २६ | २९  | २५  | २२  | १९  | २०  |
| १७ | ३४  | १४ | ३३  | ३१  | २३  | २७  | २२  |
| १८ | ५८  | ६  | ९१  | ५६  | ४   | ३   | ३   |
| १९ | ४६  | १४ | १०  | ३७  | ५५  | ५०  | ११  |
| ४  | सु. | म. | वृ. | वृ. | शु. | वा. | रा. |
| १  | ०   | ५  | १   | ६   | ११  | ५   | २   |
| २  | २०  | ४  | ११  | ७   | २३  | २२  | २२  |
| ३  | २७  | १  | ०   | २९  | १६  | ४९  | ५५  |
| ४  | ५२  | ५  | २९  | २०  | ३   | ३   | ३   |
| ५  | ५८  | ०  | ४४  | ३३  | १३  | ३१  | ११  |

|           |        |
|-----------|--------|
| २         | १२ बु. |
| १ सु. बु. | ११     |
| ४         | १०     |
| ५         | ७ बु.  |
| ६ मं. वा. | ८      |

१५ बु. २, १५ शु. १२ मं.  
 व. उ., बु. मा. उ., वृ. व. उ.  
 शु. मा. उ. पु., भा. व. उ.

अथ वैशाख शुक्ल तृतीयायां कर्तव्य विचारः—यस्मा स्नानदान जप तप जो गतिः त्यक्तो असाय फल हुन्छ, यसैले अश्वय ३ नाम रहेको हो ।  
 पितृपुण्यपुगादि श्राद्ध यवाचन यवदान यव ( जो ) को सत्त व्यंजनादि उष्ण कालमा त्रिकर-छव उपानह दण्ड कमण्डलु कठपाद इत्यादि दान गनलि  
 स्वर्ग मिल्दछ । वैशाखमासे नियमाः—वैशाखमा—एक भक्त वा, नक्त अयाचित कुनै नियम भोजन, प्रातः स्नान दान पिपल दर्शन पूजन प्रदक्षिणा जला-  
 र्पण, गौ सेवा गनलि पापनाश भै कुलको उद्धार हुन्छ । स्नान मन्त्रः—सधु हन्तु प्रसादेन ब्राह्मणातामनुग्रहात् । निर्विघ्नमस्तु मे पुष्यं वैशाखस्नानमन्त्रहम् ।  
 वैशाखे भेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन । प्रातः स्नानेन ये नाथ फलदो भव पापहन् ॥ वर्षाविचारः—आकाशमा रातो पहेलो देखिए (शेष पृष्ठ १९ मा)

श्रीशके १९०४ श्रीसंवत् २०३९ ज्येष्ठ कृष्णपक्षः (बछलागा) पा. मू. पूषा. श्र. उभा. रे. कृ. १७ (मई) ५ उत्तरायणं वसन्तर्तुः-ग्रीष्मर्तुः ।

| ग.      | वा. | ति. | घ.   | प.    | न.   | घ.    | प.  | मो. | ब.  | प.  | क.     | घ.      | प.     | योगाः | चन्द्ररा. | वि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|---------|-----|-----|------|-------|------|-------|-----|-----|-----|-----|--------|---------|--------|-------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| २६      | आ.  | १   | ३४३  | अ.    | ५४   | १३    | प.  | ६०  | ०   | तै. | ३५     | ५८      | मृत्यु | वृ.   | ३३        | ५   | ५२३ | ९   |    |     |
| २७      | सो. | २   | ८१३  | ज्ये. | ६०   | ०     | प.  | ०४४ | ब.  | ४०  | ४४     | पद्म    | वृ.    | ३३    | ८         | ५२२ | १०  |     |    |     |
| प्र. २८ | मं. | ३   | १३१५ | ज्ये. | ०३५  | शि.   | २१३ | ब.  | ४५  | ४९  | मुद्गर | ०३५     | ३३     | ११    | ५२२       | ११  |     |     |    |     |
| २९      | बु. | ४   | १८२३ | मू.   | ७१०  | ति.   | ३५३ | को. | ५०  | ४८  | ध्वज   | घ.      | ३३     | १४    | ५२१       | १२  |     |     |    |     |
| ३०      | नु. | ५   | २३१३ | मू.   | १३३१ | सा.   | ५२० | ग.  | ५५  | १६  | घाता   | २१५६    | ३३     | १८    | ५२०       | १३  |     |     |    |     |
| प्र. ३१ | शु. | ६   | २७११ | ज.    | १९१३ | शु.   | ६१९ | भ.  | ५८  | ५२  | आनन्द  | म.      | ३३     | २१    | ५२०       | १४  |     |     |    |     |
| ३२      | श.  | ७   | ३०२६ | अ.    | २४   | ०     | शु. | ६३७ | बा. | ६०  | ०      | स्थिर   | ५५५१   | ३३    | २५        | ५१९ | १५  |     |    |     |
| ३३      | आ.  | ८   | ३२२३ | अ.    | २७४३ | ब.    | ६   | ५   | बा. | १२४ | मातङ्ग | कुं.    | ३३     | २८    | ५१८       | १६  |     |     |    |     |
| ३४      | सो. | ९   | ३३   | प.    | ३०   | ८     | ऐ.  | ४३५ | ते. | २४४ | अमृत   | कुं.    | ३३     | ३१    | ५१८       | १७  |     |     |    |     |
| ३५      | मं. | १०  | ३२२१ | मू.   | ३१२१ | वै.   | ७२  | ७४  | व.  | २४७ | काण    | १६१२    | ३३     | ३५    | ५१७       | १८  |     |     |    |     |
| ३६      | बु. | ११  | ३०४८ | उ.    | ३१२० | प्री. | ५४  | ९   | व.  | ५९  | ७७     | लुम्ब   | मी.    | ३३    | ३८        | ५१६ | १९  |     |    |     |
| प्र. ३७ | शु. | १२  | २७४५ | रे.   | ३०१४ | आ.    | ४८  | ५१  | ग.  | ५५  | ४७     | मित्र   | ३०१४   | ३३    | ४०        | ५१६ | २०  |     |    |     |
| ३८      | शु. | १३  | २३५० | अ.    | २८११ | सो.   | ४२  | ४८  | अ.  | ५१  | २७     | वज्र    | मे.    | ३३    | ४२        | ५१५ | २१  |     |    |     |
| ३९      | मं. | १४  | १९   | प.    | २५२० | मो.   | ३६  | १०  | ज.  | ४६  | २५     | ध्वाङ्ग | ३९१२   | ३३    | ४४        | ५१५ | २२  |     |    |     |
| ४०      | आ.  | १५  | १३४५ | उ.    | २१५३ | अ.    | २९  | ३   | कि. | ४०  | ४९     | धूम्र   | वृ.    | ३३    | ४६        | ५१५ | २३  |     |    |     |

मार्गो भीमः ११

भ. ४०१४४ उ. ९ द्विपुष्करः २४१० उ. ३०१२६ या.

भ. १३११५ या. कृतिकायां रविः २० पुनहस्त भे ४

अगस्त्यास्तः ९ रेवत्यां शुक्रः ६ a ४ शनिः ५३

भ. २७११९ उ. ५८ या. ५२ या. वृषेऽर्कः ४७१२६

अष्टमी व्रतम्, ज्येष्ठसंक्रान्तिः ध.प. प्रवृत्तिः ५५१५९९

वक्रीबुधः ४४ ० (सिडी चह्ने) पश्चिमास्तोबुधः ४

भ. २१४७ उ. ३२१२९ या.

अपरा ११ व्रतम्,

प्रदोष व्रतम्, ध. प. निवृत्तिः ३०११४

भ. २३१५० उ. ५११२७ या. मिथुने सायनार्कः २८०

दशं श्राद्धम्

वट सावित्री ३० व्रतम्, स्नानदानादौ अमावास्या

अथ चन्द्र विज्ञानम् मेव सिंह धनुष पूर्व दिशि, वृषकन्या मकरेषु याम्य दिशि, मिथुन तुला कुम्भेषु पश्चिम दिशि, कर्क वृश्चिक मोनेषु उत्तर दिशि ।

फलं—सन्मुखे धन लाभः, दक्षिणे सुख सम्पत्ति, वामचन्द्रे धनशयः, पृष्ठेकण्टम् चन्द्रवर्णज्ञानं तत्फलञ्च—मेव सिंह वृश्चिकेषु रक्तं फलं कलह वृष कर्कतुलासु

श्वेतः फलं कार्यं सिद्धिः । मिथुन कन्या धनुष पीत फलं शुभाशुभम् । मकर कुम्भोनेषु कृष्णं फलं कष्टमिति । अथ चन्द्र स्थित राशि वशात् चन्द्रवासतस्य

फलम्—मेव वृष मिथुन वृश्चिकेषु स्वर्णं फलं सौख्यं, कर्क सिंह कुम्भोनेषु मर्त्यं फलं कार्यं हानिः, कन्या तुला धनुमकरेषु पाताले फलं धनागमः । योगिनी-

वास ज्ञानं ११९ पूर्व २११० तिथी उत्तर ३१११ तिथी आग्नेय ४११२ तिथी नैऋत्ये, ५११३ दक्षिणे ६११४ पश्चिमे ७११५ वायव्ये ८१३० तिथौ एषान्ये ।

| प. | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | मा. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| २८ | २७  | ४   | १५  | ११  | १५  | २३  | २३  |
| ३१ | १२  | १३  | ३७  | ३६  | १६  | १९  | १९  |
| ३३ | ५   | २३  | ५०  | १०  | ०   | ५९  | ५०  |
| ५३ | ५७  | ३   | ४५  | ८   | १२  | ४   | ३   |
| ११ | ४९  | ३७  | २४  | १९  | ३   | ६१  | ११  |

| प. | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | मा. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ४  | ३   | ५   | १७  | ११  | ११  | ५   | ५   |
| ४  | ३   | ४   | १७  | १०  | २३  | २२  | २२  |
| ग. | ५५  | ५९  | ५८  | ४४  | २०  | ५५  | १३  |
| ३  | ४५  | ३४  | ३५  | २५  | ७   | ४३  | ३३  |
| ५३ | ५७  | १०  | ७   | ७   | ७०  | ३   | ३   |
| २३ | ३८  | १६  | ५६  | ४८  | ५   | ३३  | ११  |

३१ सू २,

|         |       |
|---------|-------|
| वृ. २   | १२शु. |
| रा. ३   | सू. १ |
| ४       | १०    |
| ५       | ७वृ.  |
| मं. ६श. | ८     |

मं. २६ मा. उ. बु. ३

व. ७ अ. वृ. व. उ.

शु. मा. उ. पू. श. व. उ.



श्री शके १६०४ श्री संवत् २०३६ ज्येष्ठ शुक्लपक्षः (तृतीयाह्निक) पा. आ. पु. उफा. ह. ९ (मई १ जून ६) उत्तरायण-श्रीष्मर्तुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | य.   | श. | क. | घ.   | प. | योगः | चन्द्रा. | दि. | मा. | सू.      | उ.  | ता. |
|----|-----|-----|----|----|------|----|----|------|----|------|----------|-----|-----|----------|-----|-----|
| १० | सो. | १   | ७  | ५४ | रो.  | १८ | ०  | सु.  | २१ | ३९   | वा.      | ३४  | ५१  | वर्ज     | ४५  | ५६  |
| ११ | म.  | २   | ७  | ५४ | म.   | १९ | ०  | सु.  | २१ | ३९   | वा.      | ३४  | ५१  | वर्ज     | ४५  | ५६  |
| १२ | वृ. | ४   | ४९ | ३९ | वा.  | १८ | ०  | सु.  | २१ | ३९   | वा.      | ३४  | ५१  | वर्ज     | ४५  | ५६  |
| १३ | वृ. | ५   | ४४ | ०  | पु.  | ५  | ५१ | वृ.  | ५१ | ४८   | व.       | १६  | ४९  | सिद्धि   | क.  | ३३  |
| १४ | शु. | ६   | ३८ | ५२ | ति.  | ३९ | ११ | ४५   | ४५ | ६    | को.      | ११  | २६  | उत्पात   | ५९  | १२  |
| १५ | श.  | ७   | ३४ | २६ | म.   | ५७ | १४ | व्या | ३९ | १    | ग.       | ६   | ३९  | पद्म     | सि. | ३३  |
| १६ | आ.  | ८   | ३० | ५४ | पु.  | ५६ | १६ | ३३   | ३९ | भा.  | ३३       | ५७  | छल  | सि.      | ३३  | ५७  |
| १७ | सो. | ९   | २८ | २४ | उ.   | ५५ | ५४ | व.   | २९ | ९    | तै.      | ५७  | ४४  | श्रीवत्स | १०  | ५९  |
| १८ | मं. | १०  | २७ | ४  | ह.   | ५६ | ५६ | मि.  | २५ | ३५   | व.       | ५७  | १   | सौम्य    | क.  | ३४  |
| १९ | वृ. | ११  | २६ | ५८ | चि.  | ५९ | १३ | व्य. | २२ | ५९   | व.       | ५७  | ३३  | काल      | २८  | ४४  |
| २० | वृ. | १२  | २८ | १  | स्वा | ६० | ०  | व.   | २१ | २४   | को.      | ५९  | २२  | स्थिर    | तु. | ३४  |
| २१ | शु. | १३  | ३० | ३५ | स्वा | २४ | ४  | ग.   | २० | ४८   | ग.       | ६०  | ०   | गद       | ५१  | १४  |
| २२ | श.  | १४  | ३४ | ६  | वि.  | ७  | २५ | जि.  | २१ | ३    | ग.       | २२  | ०   | गुप्त    | वृ. | ३४  |
| २३ | आ.  | १५  | ३८ | २९ | अ.   | १३ | ४  | सि.  | २२ | १    | भा.      | ६   | १७  | मृत्यु   | वृ. | ३४  |

चन्द्रोदयः दशहरा स्नानारम्भः अश्विन्यां १ मेषे शुक्रः a  
द्विपुष्करः १।४९ या. रोहिण्यां रविः १४, स्वात्यां १b  
म. २२।३९ उ. ४९।३९ या.  
पुनरुफायां ४ भौमः ३७ a ३८।४२ b गुरुः २६  
कुमार ६ (सिद्धिख) म. पु चण्डीमगवती यात्रा,  
म. ३४।२६ उ. कुमार यात्रा,  
म. २।४० या. अष्टमी व्रतम्  
c रामेश्वर पूजा, हृत्यामोचन स्नानं हृषिकेशोत्सवः d  
म. ५७।१ उ. (जून ६ ता. ३०) दशहरा १० c  
म. २६।५८ या. निर्जला ११ व्रतम्, तुलसी बीजा e  
प्रदोष व्रतम्, d पुनः कृत्तिकायां बुधः २१  
f (ज्यापुन्ही) पनौती नानम्, पूर्वोदितो बुधः १०  
म. ३४।६ उ. भरण्यां शुक्रः १ e रोपणम्  
म. ६।१७ या. पूर्णिमा व्रतम्, गैडू पूजा, मन्वादिः f

| ज्ये. | मं. | बु. | गु. | शु. | श.  | रा. |
|-------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ११    | १०  | ६   | १५  | ९   | १२२ | २१  |
| १२    | ३८  | १६  | ६   | ५६  | २७  | ३३  |
| १३    | ४२  | १२  | ४   | ५५  | ३८  | १७  |
| १४    | ५७  | १३  | ३   | ७   | ७०  | ३   |
| १५    | २८  | ३०  | १२  | ४   | ३१  | ०   |
| १६    | १   | ५   | १   | ६   | ०   | ५   |
| १७    | १७  | ८   | ९   | ९   | ९२  | २१  |
| १८    | १९  | ०   | ४   | १४  | ३९  | १६  |
| १९    | ३   | ४३  | ११  | ३   | २   | ९   |
| २०    | ५७  | १८  | ३०  | ६   | ७०  | २   |
| २१    | १९  | ८   | २३  | १३  | ४३  | १९  |

|          |           |
|----------|-----------|
| रा. ३    | शु. १     |
| ४        | २ सु. बु. |
| ५        | ११        |
| मं. श. ६ | ८         |
| वृ. ७    | के. ९     |

अथ दशहरा स्नानम्—यो प्रतिपदादेखि १० मी सम्म दशहरा हुन्छ, यममा प्रतिदिन तदवकतौ दशमीमा गङ्गा नदी वाजलाशयमा स्नान गरी गंगापूजागर्तु, तन्मन्त्रः—तमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नारायण्यै रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विरवरूपिण्यै ते नमोनमः । अथ नववधूपति- गृहनिवास विचार—विवाह भण्डि पतिगृहमा रहैदा प्रथम—आषाढमा शाशू, ज्येष्ठमा जेठाजू, पौषमा शशूर, मलमासमा पति, कयमासमा बाफैजाई कष्ट गर्वछ, चैत्रमा—माईतमा नवम्न पितालाई अनिष्ट हुन्छ । अथस्वप्नशांति—नराम्रो स्वप्ना देखियो भने भरसक फेरी निदाउनु, उठेर जलाशयमा गएर स्नान गर्नु, विद्वान्स्वप्नलाई सुनाई आशीर्वाद लिनु, पीपल गौको दर्शन यथाशक्य गोकुवर्ण द्रव्य दान स्वप्नाध्याय सुख वा पाठ गर्नु, अशुभ फलनाश हुन्छ ।

श्रीशके १९०४ श्रीसंवत् २०३९ आपाढ़ कृष्णपक्षः (तछलागा) पा० मू. पूषा. उषा. उभा. मृ. आ. (जून ६ सन् ८२) उत्तरायणं ग्रीष्मर्तुः

| ग.      | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.   | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगाः     | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | ज. | ता. |   |
|---------|-----|-----|----|----|-------|----|----|-------|----|----|-----|----|----|-----------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|---|
| २४      | सो. | १   | ४३ | २५ | ज्ये. | १९ | १८ | सा.   | २३ | २७ | वा. | १० | ५६ | पद्म      | १९१८      | ३४  | ७   | ५   | ११ | ७   | *लाईअनिष्ट हुन्छ । पिरिनेको अभाव भए वस्न*             |
| २५      | म.  | २   | ४८ | ३० | मू.   | २५ | ५२ | शु.   | २५ | ९  | तै. | १५ | ५७ | छत्र      | घ         | ३४  | ८   | ५   | १० | ८   | *हुन्छ । शयनगर्दी शिरफल-पूर्वघनम् दक्षिणे आयुवृद्धि*  |
| २६      | बु. | ३   | ५३ | १७ | पू.   | ३२ | १८ | शु.   | २६ | ४१ | व.  | २० | ५३ | श्रीवत्स  | ४८१४६     | ३४  | १०  | ५   | १० | ९   | मृगशीर्षे रवि. १३ हस्तभे. १ भौमः ३६                   |
| प्र. २७ | बु. | ४   | ५७ | २३ | उ.    | ३८ | १० | क्र.  | २७ | ५० | व.  | २५ | २० | सौम्य     | म.        | ३४  | ११  | ५   | १० | १०  | भ. २०५३ उ. ५३१७ या मार्गी बुधः २८                     |
| २८      | शु. | ५   | ६० | ०  | अ.    | ४३ | ९  | तै.   | २८ | १८ | को. | २८ | ५६ | धूम्र     | म.        | ३४  | १२  | ५   | १० | ११  | *पश्चिमे-प्रबला चिन्ता उत्तरे हानिः कष्टमिति ॥        |
| २९      | श.  | ५   | ०  | २९ | घ.    | ४७ | ८  | वै.   | २७ | ५८ | ग.  | ३१ | २७ | प्रवर्द्ध | म.        | ३४  | १३  | ५   | १० | १२  | b ५०३९ (नक्कादिशी) कृत्तिकायां शुक्रः १९              |
| प्र. ३० | आ.  | ६   | २  | २६ | श.    | ४९ | ४९ | वि.   | २६ | ४२ | म.  | ३२ | ४७ | रक्षस     | कु.       | ३४  | १५  | ५   | १० | १३  | घ. पं. प्रवृत्तिः १५८                                 |
| ३१      | सो. | ७   | ३  | ८  | पू.   | ५१ | १७ | प्रो. | २४ | २६ | वा. | ३२ | ५० | मुसल      | ३५१५५     | ३४  | १६  | ५   | १० | १४  | भ. २१२६ उ. ३२१४७ या. त्रिपुङ्करः ४९१४९                |
| ३२      | म.  | ८   | २  | ३३ | उ.    | ५१ | ३० | आ.    | २१ | ९  | तै. | ३१ | ३९ | सिद्धि    | सी        | ३४  | १७  | ५   | १० | १५  | अष्टमी व्रतम् a त्रिशूलयात्रा भलभला. रोहिण्यांबुधः ५५ |
| ३३      | बु. | ९   | ३  | ३४ | रे.   | ५० | ३९ | सो.   | १६ | ५५ | व.  | २९ | १७ | उत्पात    | ५०१३९     | ३४  | १८  | ५   | १० | १६  | मिथुनेऽर्कः १३१२४ (आषाढ) संक्रान्तिः देवपाटनमा a      |
| ३४      | शु. | ११  | ५३ | ५५ | अ.    | ४८ | ४७ | श.    | ११ | ५० | व.  | २५ | ५२ | मानस      | मे        | ३४  | २०  | ५   | १० | १७  | भ. २९१७ उ. ५७१४९ या. घ. प. निवृत्तिः b                |
| ३५      | शु. | १२  | ४९ | १० | भ.    | ४६ | ५  | अ.    | ४६ | ५८ | को. | २१ | ३२ | सुदगर     | मे.       | ३४  | २१  | ५   | १० | १८  | स्मार्तानां योगिनी ११ व्रतम् हस्तर्के २ भौमः २९       |
| प्र. ३६ | श.  | १३  | ४३ | ४७ | कु.   | ४२ | ४५ | धृ.   | ५२ | २७ | ग.  | १६ | २८ | ध्वज      | ०१५५      | ३४  | २३  | ५   | १० | १९  | वैष्णवानां ११ व्रतम् मार्गी शनिः ५५                   |
| ३७      | आ.  | १४  | ३७ | ५५ | रो.   | ३८ | ५६ | श.    | ४५ | ६  | भ.  | १० | ५१ | घाता      | वृ.       | ३४  | २५  | ५   | १० | २०  | भ. ४३१४७ उ. शनि प्रदोष व्रतम् वृषे शुक्रः ७१२३        |
| ३८      | सो. | ३०  | ३१ | ४७ | मू.   | ३४ | ४९ | ग.    | ३७ | ३० | ज.  | ४६ | ५९ | आनन्द     | ६१५२      | ३४  | २६  | ५   | १० | २१  | भ. १०५११ या. (दिलाचह्ने पूजा)                         |

| १     | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-------|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| ज्ये. | १   | ५   | १   | ६   | ०   | ५  | २   |
| २५    | २३  | १०  | ७   | ८   | १७  | २२ | २१  |
| ग.    | ५८  | ६   | १३  | ४१  | ५२  | ३  | ९   |
| ३५    | ५७  | ११  | ५६  | १४  | ८   | ४२ | ४६  |
| ५३    | ५७  | २०  | ८   | ४   | ७१  | १  | ३   |
| ३३    | १२  | ५४  | १७  | ४१  | १२  | ३२ | ११  |

| १० | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ. | २   | ५   | १   | ६   | ०   | ५  | २   |
| १  | ०   | १२  | ९   | ८   | २६  | २१ | २०  |
| ग. | ३८  | ४२  | ५८  | १५  | ९   | ५५ | ४४  |
| ३  | ४४  | ४२  | २८  | ३८  | १३  | २  | ३०  |
| ५३ | ५७  | २३  | ४८  | ३७  | १   | ०  | ३   |
| ३५ | ६   | ४१  | १६  | ३१  | २७  | ४९ | ११  |

| ३ रा. | १         |
|-------|-----------|
| ४     | सू. बु. २ |
| ५     | ११        |
| मं.   | ८ शु.     |
| श. ६  | १०        |
| ७ वृ. | ९ के.     |

१ सू. ३, ५ शु. २, मं. मा. उ.  
बु. २६ मा. उ., वृ. व. उ. शु.  
मा. उ. पू. श. ४ मा. उ.

अथामावास्याजनन फल-अमावास्यामा जन्मेका बालकले पितृ मातालाई अनिष्टर दोषत्य जीवनमा पनि बाधां गर्छ-कन्याको निमित्त विशेष अनिष्ट छ, उक्त-अमावास्यामा जन्मेका कन्या पति हुन्थी यथा भवेत् अथ ह्यमायां निशि भोजन निशेधः—दशजन्मानि गृहश्च द्वादशो जन्म शुकरः । सप्तजन्मानि निश्वानश्च ह्यमायां निशि भोजनात् ॥ जीवित पितृ मातृ हुनेले वार्न पर्देन ॥ अथ नवीन वधू पतिगृह निवास फल-विवाह भएको पहिला आपाढ़मा पति गृहमावसे आशुताशपौषमा श्वशुर नाश, मलमासमा पति नाश, क्षयमासमा स्वयं नाश, ज्येष्ठमा जेठाज्यूनाश गर्छ न बस्नु चैत्रमा पितृ गृहमा न बस्नु पितृ\*



33

१८ बु. ३, मं. मा. उ. बु. मा. ०

|         |         |
|---------|---------|
| ४       | वृ.शु.र |
| ५       | १       |
| ३सू.रा. | १२      |
| ६मं.श.  | ११      |
| ७       | १०      |
| ९के.    |         |

पछुवा हावा एक साथ चलयो अथवा कैले पूर्वा कैले पछुवा हावा चलयो भन्ने अवश्य वर्ण्य होला ।

२०

[illegible]

१ सु. ४, ४ कु. ४, ३० शु. ३

|   |    |   |
|---|----|---|
| ४ | ३  | २ |
| ५ | १० | १ |
| ६ | ९  | ८ |

मं. मा. उ. बृ. मा. २६ अ.  
बृ. मा. उ. शु. मा. उ. पू. श. मा. उ.

अथ दुःस्वप्न शान्तिः—नराग्रो स्वप्न देखिपछि भरसक निदाउनु प्रातः उठेर नदीवा जलाशयमा स्नानगरी ब्राह्मण सज्जनसंग आशीर्वादलिनु, पीपलगीको दर्शनगरी स्वप्नाध्यायसुनुवा पाठगनु गोसुवर्णद्वयदानगनु अशुभ फलनाश हुन्छ । काकस्पर्श फलः काका भने दारिद्र्य मरण कुनै होला कटिमा छोये ठुलोभय, अरिष्ट होला, त्नीको शीरमाछोयेभने पतिवापुत्रको मरण रूखमनीचीजको संयोगले छोये दोष हुदैन । काक मैयुन देखिए भने ६ मास महीना मित्र अविष्टहुन्छ । काकशान्नीगर्न योग्य छ, संक्रान्ति लूतो काल्ने मन्त्र, कण्डारक रात्रिचर लूतादि भयनाशन । उलका मिमां प्रक्षिपापि मास्तु लतामयमम । कीशगहमद दीयमवतममम् । सरलेन्धन संभूतं ममारिष्टं विनाशया ।



श्रीराके १९०४ श्री संवत् २०३२ श्रावण शुक्ल पक्षः (गुलाश्व) पा. ति. ह. चि. ज्ये. पूषा. (जुलाई ७ अगस्त ८) दक्षिणाग्रनं वर्षर्तुः

| ग.     | वा.  | ति. | घ.    | प. | न. | घ.    | प. | यो. | घ.  | प. | क.     | घ.      | प.  | योगः | चन्द्रा. | दि. | मा.           | सू.        | उ.                | ता.            |                  |                     |                |                     |    |
|--------|------|-----|-------|----|----|-------|----|-----|-----|----|--------|---------|-----|------|----------|-----|---------------|------------|-------------------|----------------|------------------|---------------------|----------------|---------------------|----|
| ६ बु.  | १४२  | ३९  | ति.   | ४३ | म. | ३८    | १६ | कि. | १५  | ३३ | मातङ्ग | क.      | ३३  | ५०   | ५१४      | २१  | गुलाधर्मास्मः | तिथ्ये     | बुधः              | ८              | २                | मेला, कल्की जयन्ती, |                |                     |    |
| ७ वृ.  | २३७  | २३  | अ.    | ३९ | ५० | सि.   | ३१ | २४  | बा. | १० | १      | अमृत    | ३९  | ५०   | ५१५      | २२  | चन्द्रोदयः,   | तुलायां    | भौमः              | ५६             | ३                |                     |                |                     |    |
| ८ शू.  | ३३२  | ४७  | म.    | ३७ | १६ | व्य.  | २५ | २८  | त.  | ५  | ५      | काण     | ३३  | ४४   | ५१६      | २३  | सिंहे         | सायनांकः   | ३५                | ६              | १९ (अलपञ्चदानम्) |                     |                |                     |    |
| ९ श.   | ४२९  | १   | पू.   | ३५ | ३३ | व.    | १९ | २१  | व.  | ५७ | ३३     | लग्न    | ५०  | २३   | ५१६      | २४  | भ.            | ०५४        | उ.                | २९             | १                | या. वराह जयन्ती     |                |                     |    |
| १० आ.  | ५२६  | २०  | उ.    | ३४ | ५४ | प.    | १४ | ३०  | कौ. | ५५ | ३३     | मित्र   | क.  | ३३   | ३९       | ५१६ | २५            | नाग ५      | नागपूजनमूल.       | पु.            | दानं             | घाठ धापाखेल         | नागदह          |                     |    |
| ११ सो. | ६२४  | ४७  | ह.    | ३५ | १९ | शि.   | १० | ३१  | ग.  | ५४ | ३७     | वज्र    | क.  | ३३   | ३७       | ५१७ | २६            | ८ भौमः     | ४७ श्री शिवस्य    | पवित्रारोपणम्, |                  |                     |                |                     |    |
| १२ मं. | ७२४  | २८  | चि.   | ३७ | ०  | सि.   | ७  | ३२  | अ.  | ५४ | ५७     | ध्वाक्ष | ६१  | ३३   | ३४       | ५१७ | २७            | भ.         | २४                | २८             | उ.               | ५४                  | ५७             | या. द्विपुष्करः २४  |    |
| १३ वृ. | ८२५  | २६  | स्वा  | ३९ | ५७ | सा.   | ५  | ३१  | वा. | ५६ | ३२     | धूम्र   | तु. | ३३   | ३२       | ५१८ | २८            | बुधाष्टमी  | व्रतम्,           | चित्रर्क्षे    | भौमः             | ५६                  | अश्लेषायां     | बुधः                |    |
| १४ बु. | ९२७  | ३८  | वि.   | ४४ | ४  | शू.   | ४  | ३१  | त.  | ५९ | १४     | वर्द्ध  | २८  | ३३   | ३९       | ५१८ | २९            | e बन्धनम्, | हयग्रीवोत्पत्तिः, | ल.पु.          | कुम्भेश्वर मेला  | ८                   |                |                     |    |
| १५ शू. | १०३० | ५८  | अ.    | ४९ | १६ | गु.   | ४  | २४  | व.  | ६० | ०      | रक्ष    | वृ. | ३३   | २६       | ५१९ | ३०            | पुनर्वसौ   | शुक्रः            | ५५             | ८ (व्याजानके     | गुह्यी पुन्ही)      | ८              |                     |    |
| १६ श.  | ११३५ | १३  | ज्ये. | ५५ | १४ | ज.    | ५  | ६   | व.  | ३  | ५      | मुसल    | ५५  | १४   | ३३       | ५२० | ३१            | भ.         | ३५                | उ.             | ३५               | १३                  | या. पुत्रदा ११ | व्रतम्, चित्रर्क्षे |    |
| १७ आ.  | १२४० | ४   | मू.   | ६० | ०  | ऐ.    | ६  | २१  | व.  | ७  | ३८     | सिद्धि  | घ.  | ३३   | २०       | ५२० | १             | (वहिवोये)  | (अगस्त ८          | ता. ३१)        | ८                | सिंहे               | बुधः           | ३३                  | ४८ |
| १८ सो. | १३४५ | ७   | मू.   | ६० | ०  | ऐ.    | ६  | २१  | व.  | ७  | ३८     | सिद्धि  | घ.  | ३३   | २०       | ५२० | १             | सोम प्रदोष | व्रतम्,           |                |                  |                     |                |                     |    |
| १९ मं. | १४४९ | ५५  | पू.   | ८  | १२ | वि.   | ९  | ३४  | ग.  | १७ | ३१     | मित्र   | २४  | ४४   | ३३       | ५२२ | ३             | भ.         | ४९                | ५५             | उ.               | अश्लेषायां          | रविः           | २३, स्वात्यां       | ८  |
| २० बु. | १५५४ | ७   | उ.    | १४ | २० | प्री. | १० | ५१  | अ.  | २२ | १      | मुद्गर  | म.  | ३३   | १०       | ५२२ | ४             | भ.         | २२                | १              | या. पूर्णिमा     | व्रतम्, ऋषितर्पणी   | १५             | रक्षा               | ८  |

अथ नागपूजमे विशेषः—नाग ५ भा-गोमय नागवनाई नागको मानपत्रमा दीपकलशं गणेश पूजनपूर्वकं दधिद्वार्डिकुर कुश सिद्धर गंधादिले नागको पूजा गरी दास्ताले सर्पको भय हुँदैन । सर्वविघनाशन मन्त्रः—ओम् कुरुकुलये हुफदस्वाहा । यो मन्त्र परिमित जपी फुकी दिलासे सर्पको विघनाश हुन्छ । नागपूजन गृहारम्भे नागशीरो ज्ञानम्—भाद्राश्विन कार्तिकमा पूर्वशीर, मार्ग पौष माघमा दक्षिण फा, चैत्र वैशाखमा पश्चिम, ज्येष्ठापाद श्रावणमा उत्तर दिशा नागको शीर हुन्छ । अत्र रक्षा बन्धनः—येन वदो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वां प्रतिवदनामि रक्षे माचल-माचल । यज्ञोपवित (जनै) शुद्ध पवित्र जमीनमा उपजको कपासवाट सधवा ब्राह्मणीले कातेका धागाले विधिपूर्वक बनावेको जनै शास्त्रविधिले संस्कार गरी मन्त्रीको जनै लगाउनु पर्छ\*

| १६ सू. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|--------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ.     | ३   | ६   | ३   | ६   | २  | ५   |
| १      | १०  | २   | १५  | ९   | १६ | २३  |
| ग      | २९  | ४४  | ५२  | ११  | १९ | ४३० |
| ३      | १४  | २९  | ४४  | २६  | ५८ | ५८  |
| ५२     | ५७  | ३४  | ११० | ५७  | ३  | ३   |
| ५८     | १०  | ४   | ५४  | २३  | ३९ | ११  |

| १७ सू. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|--------|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ.     | ३   | ६   | ३   | ६   | २  | ५   |
| १९     | १७  | ६   | २८  | ९   | २४ | २३  |
| ग.     | ८   | ४३  | ४५  | ४९  | ४७ | ३४  |
| ३      | ४४  | ५८  | ७   | २३  | ५  | ४३  |
| ५२     | ५७  | ३४  | १०९ | ५७  | ३  | ३   |
| ४९     | १७  | ४३  | ३६  | ५४  | ५० | १९  |

७ सं. ७, २० वृ. ५

सं. मा. उ. वृ. मा. अ., वृ. मा. उ. शु. मा. उ. पू., श. मा. उ.

श्रीशाके १९०४ श्रीसंवत् २०३९ भाद्रपद कृष्णपक्षः (गुल्लागा) पा०श.पू.भा. आ. म. २४ (१९८२ अगस्त ८) दक्षिणायन वर्षर्तुः

| ग.         | वा.  | ति. | ल.   | प. | न. | घ.    | प. | यो. | घ.  | प. | क. | घ.       | प.    | योगा: | च. | रा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |
|------------|------|-----|------|----|----|-------|----|-----|-----|----|----|----------|-------|-------|----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| २१वृ.      | १५७  | २२  | श.   | १६ | ३  | आ.    | ११ | ३५  | बा. | २५ | ४४ | ध्वज     | ५११५६ | ३३    | ७  | ५   | २३  | ५   | २३  | ५  | २३  |
| २२शु.      | २५६  | २८  | घ.   | २४ | ६  | सौ.   | ११ | ३२  | तै. | २८ | २५ | धाता     | कुं.  | ३३    | ३  | ५   | २४  | ५   | २४  | ५  | २४  |
| २३श.       | ३६०  | ०   | श.   | २७ | २६ | शो.   | १० | ३५  | व.  | २६ | ५४ | आनन्द    | कुं.  | ३२    | ५८ | ५   | २४  | ५   | २४  | ५  | २४  |
| प्र० २४आ.  | ४६४  | ६   | पु.  | २९ | २२ | अ.    | ८  | ३८  | बा. | ३० | ८  | चर       | १३१५३ | ३२    | ५५ | ५   | २५  | ५   | २५  | ५  | २५  |
| २५सौ.      | ५५८  | १६  | उ.   | ३० | ६  | सु.   | ५  | ४९  | को. | २६ | ८  | गङ्गा    | मी.   | ३२    | ५२ | ५   | २६  | ५   | २६  | ५  | २६  |
| २६मं.      | ६५५  | ३३  | रे.  | २६ | ४५ | ध.    | ५  | ४५  | ग.  | २६ | ५६ | शुभ      | २६१४५ | ३२    | ५० | ५   | २६  | ५   | २६  | ५  | २६  |
| प्र० २७बु. | ७५१  | ४६  | अ.   | २८ | १८ | गं.   | ५१ | १६  | म.  | २३ | ३६ | मृत्यु   | मे.   | ३२    | ४७ | ५   | २७  | ५   | २७  | ५  | २७  |
| २८वृ.      | ८४७  | ८   | भ.   | २५ | ५५ | वृ.   | ४४ | ५६  | वा. | १६ | २७ | पद्म     | ४०१८  | ३२    | ४३ | ५   | २७  | ५   | २७  | ५  | २७  |
| २९शु.      | ९४१  | ५१  | कुं. | २२ | ४६ | ध्रु. | ३८ | ३   | तै. | १४ | २६ | छत्र     | वृ.   | ३२    | ४१ | ५   | २८  | ५   | २८  | ५  | २८  |
| ३०श.       | १०३६ | ३   | रो.  | १६ | ७  | व्या  | ३० | ४४  | व.  | ८  | ५७ | श्रीवत्स | ४७१६  | ३२    | ३८ | ५   | २८  | ५   | २८  | ५  | २८  |
| ३१आ.       | ११२६ | ५७  | मृ.  | १५ | ५  | ह.    | २३ | ६   | व.  | ३  | ६० | सौम्य    | मि.   | ३२    | ३४ | ५   | २९  | ५   | २९  | ५  | २९  |
| प्र० ३२सौ. | १२२३ | ४४  | आ.   | १० | ५४ | व.    | १५ | २६  | ग.  | ५० | ४१ | काल      | ५२१४८ | ३२    | ३१ | ५   | ३०  | ५   | ३०  | ५  | ३०  |
| ३३मं.      | १३१७ | ३८  | पु.  | ६  | ४६ | सि.   | ७  | ४७  | भ.  | ४४ | ४४ | स्थिर    | क.    | ३२    | २८ | ५   | ३१  | ५   | ३१  | ५  | ३१  |
| ३४बु.      | १४११ | ५०  | ति.  | ५  | ३६ | व्य.  | ५  | ३६  | च.  | ३६ | ९२ | मातङ्ग   | ५६१२८ | ३२    | २५ | ५   | ३२  | ५   | ३२  | ५  | ३२  |
| ३५वृ.      | १५०६ | ३४  | म.   | ५६ | ४२ | प.    | ४६ | ५०  | कि. | ३४ | ९६ | मुसल     | सि.   | ३२    | २१ | ५   | ३२  | ५   | ३२  | ५  | ३२  |

(गोयात्रा-सापार) घ. प. प्रवृत्ति: ५१५६  
(दधुसाया) (मतया)

भ. २६१५४ उ. स्वात्यां २ गुरु: ६ (दधुसाया)

भ. ०१२० या कर्कटेशुक: १०१८

स्वात्यां २ भौम: ३० a यात्रा च. ल. पु. भौम यात्रा

भ. ५५१३३ उ. घ. पं. निवृत्ति: २९१४५, तिष्येशुक ५५

भ. २३१३९ या d पूषायां बुध: ५ पश्चिमोदितो बुध: २९

अष्टमी व्रतम् श्रीकृष्णजन्माष्टमी व्रतम्, मन्वादि: d

श्रीकृष्णयात्रा, पाल्पातानसेन भगवती यात्रानारायणी

भ. ८५७ उ. ३६३ या u मन्वादि: कुशग्रहणम्

अजा ११ व्रतम्, स्वात्यां ३ भौम: ४

सोम प्रदोष व्रतम्,

भ. १७३८ उ. ४४१४४ या सिंहेशुक: १९१३४ (भाद्र) e

दर्शश्राद्धम्, e संक्रान्ति: (पञ्चदानजुग) (चह्लेपुजा)

स्नानदानादौ अमावास्या, कुशच्छेदनम्, गोकर्णस्नानं u

| १८ | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| आ. | ३   | ६   | ४   | ६   | ३   | ५  | २   |
| २६ | २३  | १०  | ११  | १०  | ३   | २४ | १७  |
| ग. | ४९  | ५०  | १३  | ३०  | १७  | ७४ | ६६  |
| ३  | ३५  | ०   | १२  | ३   | २९  | ३४ | २८  |
| ५२ | ५७  | ३६  | १०४ | ६   | ७२  | ४  | ३   |
| ४० | २६  | १०  | ३८  | ५५  | ५४  | ५७ | ११  |

| १९  | सू. | मं. | बु. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| मा. | ४   | ६   | ४   | ६   | ३   | ५  | २   |
| १   | ०   | १५  | २२  | ११  | ११  | २४ | १७  |
| ग.  | ३१  | ३   | ५२  | २५  | ४४  | ४४ | २४  |
| ३   | ३८  | ५५  | २२  | ३०  | ३५  | २३ | १३  |
| ५२  | ५७  | ३६  | ९६  | ८   | ७३  | ५  | ३   |
| ३२  | ३६  | ५४  | ४०  | २   | ०   | २६ | ११  |

१ सू. ५, २४ शु. ४, मं. मा. उ.

बु. मा. २८ उ. वृ. मा. उ.

शु. मा. उ. पू. श. मा. उ.

अथकुशच्छेदन मन्त्रः—विरञ्चिना सहोत्पन्न परमेष्ठी निसर्गतः । नृदः सर्वाणिपानानि दमेस्वस्तिकरो भव ॥ यो मन्त्रले प्रार्थना गरी ॥  
अहोर्दस्वाहा यो मन्त्रले पूर्वोत्तरमुखगरी छेदन गर्नु । अथ वर्षा विचार—अतिवृष्टि अनावृष्टि भएमा अतिकाल, अकालको वर्षाले रोग भय, अकालमा  
३ दिन वढी वर्षा भएत्यस देशका प्रधान पुत्रको वधः ७ दिन वर्षा भए राजामा पीडा प्रजामा रोग । हाड मांस बोसो तेल रगत अंगार धूलो  
माछो सर्प भ्यागुतो गडेउलो वस्यो भर्ने देशमा पर चक्र भय जनतामा रोग भय हुन्छ । सिंहको गो प्रसवे नारदः भानौ सिंहगते चैव यस्य गौ  
संप्रसूयते । करणं तस्य निर्विष्टं पृथ्वीमसिः न संशयः । अत्र शान्ति प्रकृत्यम् ।



|          |    |     |     |    |     |
|----------|----|-----|-----|----|-----|
| २०६. मं. | व. | गु. | शु. | श. | रा. |
|----------|----|-----|-----|----|-----|

१ स्तानाम् कागेश्वर मेला, श्रीमहालक्ष्मी, व्रतारम्भः g  
 चन्द्रोदयः (गुलाधर्म समाप्तिः) (दरशाने) स्वात्मा १  
 हरिता. ३ व्रतम् (तिज) मन्वादिः अश्ले. शुक्रः ५२  
 भ. २०१४१ उ. ५३१५३ या. गणेश ४ चन्द्रदर्शनदोषः c  
 तृप्ति ५ मत्तपि नू. (कोखजावि) कन्या. माय. ५११४१  
 गूर्यः ६ विष्णुकरः ५०११ उ. ४ दुर्वाण्टमी व्रतम्  
 भ. ५३१४० उ. भ. ५ मङ्गलकुण्ड मेला, विणावायां e  
 भ. २०११९ या. अष्टमी व्रतम्, कागेश्वरी c कायज f  
 a ४ भौमः २९ उवायां बुधः १४ च (मगया)  
 c (चथा कन्या. बुधः २९१४४ e १ भौमः ५७ अमुताभरण ७  
 भ. ४११४१ उ. १ रवौछ इन्द्र यावा, ध.पं. प्र. ९१२६  
 भ. ११११४ या. हरिपरिव्रतिनी ११ व्रतम्, h  
 प्र. ज. (इन्द्र खजोरियानम्, वामन १२ (मतछोयके) k  
 (हूणवा) (सितस्वर ९ ता. ३०) मिहै शुक्रः ४११३  
 भ. ०६१४७ उ. ५०१५९ या. पूणिमा व्रतम् अनन्त ११ r  
 इन्द्र दहन्मानम्, मिहै (पौखरी मेला, (डयापन्ही) w

| श. | गु. | च. | वृ. | गु. | शु. | श. | रा. |
|----|-----|----|-----|-----|-----|----|-----|
| १  | ४   | ६  | ५   | ६   | ५   | २  |     |
| ११ | १३  | २३ | ११  | १३  | २८  | २६ | १६  |
| ग. | ५०  | ५० | २१  | ३०  | ५६  | ७  | ३१  |
| ३  | ५०  | ६६ | ५८  | ५०  | ४   | २३ | ४२  |
| ५८ | ५७  | ३८ | ६३  | ०   | ७३  | २  | ३   |
| १६ | ५८  | २८ | ३७  | ४६  | ५१  | ०  | ११  |

|   |   |   |
|---|---|---|
| ३ | ६ | १ |
| ७ | ५ | २ |
| ८ | १ | ९ |

१. मा. उ. बु. मा. उ. वृ. मा. उ.  
 २. मा. उ. पू. ज. मा. उ.





श्री १९०४ श्रीसंवत् २०३९ अधिकआश्विन शु.प. (अनलाश्व) सं.पा.उ.पा.चि.अ.पू.पा.पू.भा ३.भा. (सित.९ अक्टो.१०) दक्षिणायननगरदुतुः

| ग. वा. नि. प्र. प. न. घ. प. यो. घ. प. क. घ. प. योगः  | चन्द्ररा. दि. मा. यू. उ. ता. |
|--|------------------------------|
| ० ग. १२६ १२ उ. १२ ३० ग. ५० ५५ वा. ५५ २५ उ. पा. न.    | व. ३० २१ ५५ ६ १८             |
| ३ भा. २२ ६ ३७ ह. १२ ५ ६ ग. ४७ २१ नि. ५५ २७ मानम      | ६२ ५७ ३० १५ ७ ५६ १९          |
| ५ मा. ३२ ४ १८ चि. १३ ३० ग. ४४ ६६ व. ५४ ६९ म. द. ग.   | तु. ३० १५ ५५ ७ २०            |
| ५ मं. ४२ ५ ७ स्वा. १५ ५० नि. ४३ १० व. ५४ २६ श्व. न.  | तु. ३० १५ ५५ ७ २१            |
| ६ वृ. ५२ ७ ३१ वि. १५ २५ वि. ४० ३५ को. ५५ ११ धागा     | ३३ ३० ३० ५५ २२               |
| ७ बु. ६३ ० ५२ अ. २५ ७ प्री. ४२ ६७ ग. ६० ७ आनन्द      | वृ. ३० ४ ५५ ७ २३             |
| ८ शु. ७३ १ १५ अ. २५ ७ ग. ४३ ६१ म. ३ २ चर             | २५ ६७ ३० ५ ७ २४              |
| ९ ग. ८३ २ ३५ म. ३५ ५५ मो. ४० ७ म. ७ ६० ग. द.         | ध. २५ ५६ ५ १ २५              |
| १० आ. ९३ ३ २० पु. ४२ ३० ग. ४६ ३३ वा. १० ६६ शुभ       | ५० ७ २० ५७ ६ ७ २६            |
| ११ मा. १० ४ ५० उ. ४८ ५३ य. ४७ ५१ नि. १७ ६९ म. त. पु. | ग. २० ४८ ६ ७ २७              |
| १२ मं. ११ ५ ४० ध. ५४ ३३ मु. ४८ ६६ व. २० ३० लु. व.    | म. २० ४८ ६ ७ २८              |
| १३ वृ. १२ ६ १० घ. १५ २० ध. ४८ ५६ व. २६ ०० मि. व.     | २७ ४८ २० ६ ७ २९              |
| १४ बु. १३ ७ ० ग. ६० ० ग. ४८ ११ को. २० ११ व. ज.       | कुं. २९ ३२ ६ ७ ३०            |
| १५ रा. १३ ८ २९ ग. ३२ ० ग. ४८ ३५ ग. ३१ ० मी. म.       | ५० १ ४९ ३२ ६ ७ ३१            |
| १६ म. १४ ९ ३५ पु. ५५ २५ व. ४६ २५ ग. ३१ २० काल        | मी. २९ ३२ ६ ७ ३२             |
| १७ आ. १५ १० ४० उ. ७१ ११ ध. ४० २६ वा. ३० ६० स्थिर     | गी. २९ ३२ ६ ७ ३३             |

संस्पर्मासारम्भः (अविक) स्वात्यां ४ गृहः ४९  
 चन्द्रोदयः द्विपुष्करः १२।२४ उ. २४।३७ या.  
 भ. ५४।४७ उ. अनुराधाया २ भौमः २१  
 भ. २५।१७ या. मङ्गल ४ a बुधः ११  
 उफायां शुक्रः २३, तुलायां सायनाङ्कः ५३ पुनरुफायां a  
 भ. ३५।१२ उ. बुधः ३०  
 भ. ७।४० या. अष्टमीव्रतम् अनुराधायां ३ भौमः १७  
 कन्यायां शुक्रः ४।२३  
 हस्तार्थे रविः ३३ c द्विपुष्करः ५४।४२ उ.  
 भ. २२।३० उ. ५४।४२ या पद्मिनी ११ व्रतम् c  
 घ.पं.प्र. २७।४ पश्चिमास्तः शनिः २४  
 प्रदोष व्रतम् अनुराधाया ४ भौमः ६  
 (अक्टोवर १० ता.३१) पूर्वावितो बुधः ११  
 भ. १।३५ उ. ३१।२९ पूर्णिमा व्रतम्  
 (अनलापुल्ली)

| २४ सू. मं. | वृ. घ.         | शु. रा. |
|------------|----------------|---------|
| ५५ ७       | ५ ६ ४ ५ २      |         |
| ५५ ७       | १३ १७ ०४ २८ १५ |         |
| ग. २५ ४१   | ११ ५ ४७ २५ ३२  |         |
| ३७ ३१      | २५ ७ १५ ३१ ५६  |         |
| ५१ ५८ ४०   | ४४ ११ ७४ ७ ३   |         |
| ५५ ६० ५२   | २१ ४८ १२ ८ ११  |         |

| २५ सू. मं. | वृ. घ.         | शु. रा. |
|------------|----------------|---------|
| ५५ ७       | ५ ६ ४ ५ २      |         |
| १२ ११ १०   | ७ १८ ३ २९ १५   |         |
| ग. १७ २९   | ३७ ३८ ७ १४ १०  |         |
| ३१ २१ १५   | १० ५६ २२ २६ ४१ |         |
| ५१ ५८ ४१   | ३० १२ ७४ ७ ३   |         |
| ४६ ५६      | ३० १५ ०१ १८ ११ |         |

१० शु. ६ मं. मा. उ.

|       |              |
|-------|--------------|
| वृ. ७ | शु. ५        |
| मं. ८ | सू. बु. श. ६ |
| १ के. | रा. ३        |
| १०    | १२           |
| ११    | १            |

बु. व. १५ उ. वृ. मा. उ.  
 शु. मा. उ. पू. श. मा. १३ अ.

तृतिदि दिशासा आश्विनक गमनगर्दा कते पदार्थ—पूर्वमा धू, दधि, तिल, चावल, पश्चिम, माका, उत्तरमा दुध, सूर्याद वारमा—शुक्रवार, शनिवार, मंगलवार पाथम, मंगलवार मद, वधवार ताने को दुध, शुक्रवार दही शुक्रवार काचो दुध, शनिवार तिल चामल, प्रतिप्रदादि तिथिमा प्रतिप्रदामा बर्क पत्र द्वि० चोलाती, त. भा धू, चनु, मा जोने विकार, पं. मा मूगी, व. मा सुनपानी, स. मा मालपूवा, अ. मा विजोरा, न. मा जल, द. मा गोमय, प. मा युवाध, हा. मा पायग, १२ मा गंड, च. मा रगत, पू. मा मूगी, खादे बाहेरी गमन गर्नु शुभहुन्छ। भक्षवस्तु भये खानू, अभक्षवस्तु भयेहेनु

| २६ | म. | मं. | बु. | बु. | बु. | बु. | रा. |
|----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| आ. | ५  | ७   | ५   | ६   | ५   | ६   | ५   |
| १० | १८ | १७  | ६   | २०  | १२  | ०१४ | ५   |
| ग. | १० | ११  | १०  | १०  | १०  | १०  | १०  |
| ३  | ३० | ३०  | १०  | ३०  | ३०  | ३०  | ३०  |
| ७  | ५० | ४९  | १०  | १०  | ७०  | ७०  | ३   |
| ३  | १० | ३६  | ३०  | ४०  | ३०  | २०  | ११  |

|                                  |           |   |   |
|----------------------------------|-----------|---|---|
| १०. ज. ७,                        |           |   |   |
| वृ. अग.                          |           |   | ५ |
| मं. ८                            | मृ. वृ. ६ | ४ |   |
| १. के.                           | रा. ३     |   |   |
| १०                               | १२        | २ |   |
| ११                               | १         |   |   |
| मं. मा. उ. वृ. १२ मा. उ. वृ. मं. |           |   |   |
| उ. वृ. मा. २६ अ. वृ. श. मा. अ.   |           |   |   |

दशमा अधिक फल लगे नालाक फल लहसुन, लहसुन, शिलाजी भने तिल मास अधिक, शिरोप अधिक फले कागनु अधिक, कुंदका फल अधिक हुदा बकास अधिक, लवा अधिक, लोभने गीमको अन्न, अदो (मयर) अधिक फले गहुन अधिक, कुस धुवी अधिक फैलाये छुनु राम्रो हुन्छ तीम को फल अधिक राम्रो हुन्छ अन्नको लहसुन, लोभने गीमको अधिक फल लगे अनिनाल पछि, आम अधिक फले प्रजानाद कल्याण हुन्छ १. नाथोको फल्यो भने रोग को वृद्धि हुन्छ कालको फल अधिक लगे रोग को कमी अन्नको लहसुन, अदो । अन्नको सोमवारमा शिलव्रत गर्नाले विद्याधन पुर्नादि भिन्दछ ।



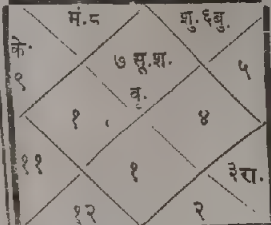
श्रीशके १९०४ श्री सं० २०३९ शुद्धाश्विनशुक्लपक्षः (कौलाश्व) पा. चि. ज्ये. पूषा. श. पूषा. (अक्टो. १० नवम्बर ११) दक्षिणायनशरदृतुः

| ग.      | वा. | ति. | घ. | प.    | न. | च. | प.    | मा. | ध. | प.  | क. | घ. | प.       | यागाः | चन्द्राः | व. | मा. | सू. | उ. | ता. | व  |
|---------|-----|-----|----|-------|----|----|-------|-----|----|-----|----|----|----------|-------|----------|----|-----|-----|----|-----|----|
| १. आ.   | १   | १७  | १७ | चि.   | २१ | २९ | वि.   | ४   | २१ | कि. | २७ | २२ | पय       | १।६   | २८       | २१ | ६   | १९  | १७ | १७  | १७ |
| १. मा.  | २   | ५   | २१ | स्वा. | २३ | ३२ | वि.   | १   | ३३ | बा. | २० | ४० | छत्र     | तु.   | २८       | २१ | ६   | २०  | १८ | १८  | १८ |
| २. म.   | ३   | ६   | १० | नि.   | ३६ | ४९ | आ.    | ५   | २६ | तै. | २९ | ३१ | श्रीवन्म | २०।५९ | २८       | १७ | ६   | २१  | १९ | १९  | १९ |
| ३. व.   | ३   | ०   | ११ | अ.    | ४१ | १६ | सी.   | ५   | ३२ | व.  | ३२ | २५ | सौम्य    | व.    | २८       | १२ | ६   | २२  | २० | २०  | २० |
| ४. व.   | ४   | ६   | ९  | ज्ये. | ४६ | ४४ | शा.   | ५   | ११ | ब.  | ३६ | २८ | काल      | ४६।४४ | २८       | ८  | ६   | २२  | २१ | २१  | २१ |
| ५. गु.  | ५   | ८   | ३१ | मू.   | ५२ | ५० | अ.    | ६   | ०  | को. | ४१ | ७  | स्थिर    | घ.    | २८       | ४  | ६   | २३  | २२ | २२  | २२ |
| ६. ज.   | ६   | १३  | ३१ | रू.   | ५९ | २१ | अ.    | ०   | १९ | ग.  | ४६ | १७ | मान      | झ.    | २८       | ०  | ६   | २४  | २३ | २३  | २३ |
| ७. आ.   | ७   | १८  | ५६ | उ.    | ६० | ०  | मु.   | १   | ४६ | आ.  | ५१ | २८ | अमृत     | १५।१७ | २७       | ५६ | ६   | २५  | २४ | २४  | २४ |
| ८. मो.  | ८   | २३  | ५० | उ.    | ५  | ४७ | मू.   | २   | ५  | बा. | ५६ | १३ | काण      | म.    | २७       | ५२ | ६   | २६  | २५ | २५  | २५ |
| ९. मं.  | ९   | २८  | २७ | अ.    | ११ | ४२ | शू.   | ४   | २  | तै. | ६० | ०  | लुम्ब    | ४४।१४ | २७       | ४८ | ६   | २६  | २६ | २६  | २६ |
| १०. बु. | १०  | ३१  | २९ | ध.    | १६ | ४६ | मं.   | ४   | २१ | तै. | ०  | १३ | मित्र    | कुं.  | ०७       | ४५ | ६   | २७  | २७ | २७  | २७ |
| ११. व.  | ११  | ३४  | २१ | श.    | २० | ५३ | वृ.   | ३   | ५३ | व.  | ३१ | ०  | वज्र     | कुं.  | २७       | ४१ | ६   | २८  | २८ | २८  | २८ |
| १२. शु. | १२  | ३५  | ३० | पू.   | २३ | ४३ | धृ.   | २   | २८ | व.  | ४  | ५५ | ध्वांश   | मा०   | ०७       | ३८ | ६   | २८  | २८ | २८  | २८ |
| १३. आ.  | १३  | ३५  | २२ | उ.    | २५ | १८ | व्या. | ५   | १८ | का. | ५  | २६ | धूम्र    | मी.   | २७       | ३४ | ६   | २९  | २९ | २९  | २९ |
| १४. आ.  | १४  | ३३  | १८ | रे.   | २५ | ४० | व.    | ५   | २१ | ता. | ४  | ४० | वर्ध     | २५।४० | २७       | ३१ | ६   | ३०  | ३० | ३०  | ३० |
| १५. मो. | १५  | ३९  | २६ | अ.    | २४ | ५६ | मि.   | ४०  | ५  | भ.  | ३  | ४३ | रश्म     | मे.   | २७       | २८ | ६   | ३०  | ३० | ३०  | ३० |

| मं. द. | सू. श. | गु. द. बु. | श. रा. |    |    |    |    |    |
|--------|--------|------------|--------|----|----|----|----|----|
| का.    | ६      | ७          | ५      | ६  | २  |    |    |    |
| ग.     | २      | २७         | १६     | २३ | २९ | १  | १४ |    |
| मं.    | ३      | १७         | ३२     | ४  | ३५ | ५० | ३  |    |
| ग.     | ४      | २०         | ८      | ३१ | १९ | १७ | ५६ |    |
| मं.    | ५      | १९         | ४२     | ७  | १३ | ७४ | ७  |    |
| ग.     | १५     | ४७         | २७     | २१ | १२ | ४६ | ३२ | ११ |
| मं. द. | सू. श. | गु. द. बु. | श. रा. |    |    |    |    |    |
| का.    | ६      | ८          | ५      | ६  | २  |    |    |    |
| ग.     | १      | २          | २६     | २४ | ८  | २  | १३ |    |
| मं.    | २      | २०         | ०      | ३६ | १९ | ४१ | ४१ |    |
| ग.     | ३      | २४         | २१     | ३३ | ३९ | ४१ | ४४ |    |
| मं.    | ५      | १६         | ४३     | ९० | १३ | ७४ | ७  |    |
| ग.     | ३      | १          | ३१     | २० | ५४ | २६ | ११ |    |

३. सु. ७, द. मं. १, १२ व. ७, ३ सु. ७

|          |            |
|----------|------------|
| मं. द.   | शु. द. बु. |
| के. १    | ५          |
| ७ सु. श. | ४          |
| १        | १          |
| ११       | ३ रा.      |
| १२       | २          |



अथ शुभं प्रतिपदमा घटस्थापना गरी तवमी सम्म दुर्गापूजा एकोत्तर बुद्धिले कुसारी, पूजा महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती पूजा समवर्तीपाठ नक्त भोजन दशमीमा विसर्जन गरी प्रसाद (टीका) लगाउनाले वर्ष भर सुख शान्ति मिल्दछ । जगन्माता भगवती जीववलीले मात्र खुसी हुने होइनन् श्रद्धा भक्तिनले पनि हुन्छ । स्मार्त बलिदान—कुम्भार्द नारिकेलञ्च श्रीफल चक्षुमेव च । वस्त्रेण वेष्टितं कृत्वा छेदयेच्छुरिकादिभिः ॥ एष स्मार्त-वनिः प्राक्काः धर्मशास्त्रानुगतिभिः ॥ यस्य यत्राधिकभक्तिस्तेन तुष्यन्ति देवता ॥ पञ्चवलि गर्दा—

मं. मा. उ. बु. मा. उ. बु. मा. १२  
म. आ. शु. अ. पू. श. मा. अ.

३० सु. मं. बु. कृ. श. श. रा.

[illegible]

A Sri Yantra diagram, a complex geometric figure consisting of nine interlocking triangles that radiate from a central point (bindu). The triangles are surrounded by two concentric circles of lotus petals (the inner circle has 8 petals, the outer has 16). The entire diagram is enclosed within a square border with T-shaped gates (bhupura) on each side. Inside the triangles, there is Sanskrit text and numbers. The text includes 'मं.कै.' (Mankai), 'सू.७.बु.शु.व.' (Su.7.Bu.Shu.V.), and 'शा.' (Sha.). The numbers are १०, ४, ११, १, १२, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५

मं.सा. उ. दु. मा. १७ अ.वृ.मा.  
अ.श. मा. अ.पु. श. मा. १७ उ.

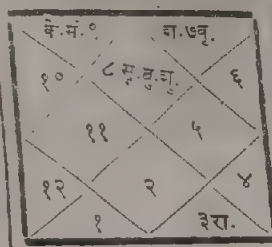


श्रीशके १९०४ श्रीसंवत् २०३९ कार्तिक शुक्लपक्षः (कछलाश्व) पा० मृ.पूपा.पूभा. २ ( नवं. ११ ) दक्षिणायन-शरदृतुः हेमन्तर्तुः

| ग.वा.ति. | घ.प.  | न.घ.प.    | यो.घ.प.    | क.घ.प.   | योगा.   | चन्द्रा | दि.मा. | सू.उ.ता. |
|----------|-------|-----------|------------|----------|---------|---------|--------|----------|
| १मं.     | १२३१४ | अ. १२४०   | शो. १२४१   | कि. ४५९  | वज्र    | वृ.     | २६३५   | ६४११६    |
| २बु.     | २२९४९ | उ. २००    | अ. १२२१    | बा. ८१   | ध्वाक्ष | वृ.     | २६३५   | ६४११७    |
| ३वृ.     | ३४४२३ | ज्ये. ३५७ | सू. १२४८   | तै. १२६  | काल     | ३१५७    | २६३९   | ६४२१८    |
| ४शु.     | ४४९३० | मृ. ९२०   | वृ. १२४३   | व. १६५७  | स्थिर   | घ       | २६३२   | ६४२१९    |
| ५षा.     | ५५४५५ | मृ. १६०३  | बा. १५२    | व. २२१३  | मान     | ३३१०    | २६३४   | ६४३२०    |
| ६आ.      | ६६०१७ | उ. २२५३   | ग. १६०३    | तै. २७२७ | अमृत    | म.      | २६२१   | ६४३२१    |
| ७लो.     | ७७०१५ | अ. २२५७   | वृ. १७२५   | ग. ३२१५  | सिद्धि  | म.      | २६१२   | ६४३२२    |
| ८मं.     | ८८३१४ | अ. ३६१७   | घ. १७२५    | म. ३६१६  | उत्पात  | ११३५    | २६१५   | ६४३२३    |
| ९बु.     | ९९८२३ | अ. २२३६   | वा. १७२५   | वा. ३९१३ | मान     | कु.     | २६१३   | ६४३२४    |
| १०वृ.    | १०९०० | मृ. १७१६  | तै. १६०३   | नै. ४०५८ | मङ्गल   | २११५    | २६१८   | ६४३२५    |
| ११शु.    | ११९९० | उ. १७२५   | व. १७१६    | व. ४१२८  | ध्वज    | मी.     | २६१०   | ६४३२६    |
| १२षा.    | १२९९० | अ. १७१६   | नि. १७१६   | ब. ४०४०  | धाता    | ४४१४    | २६०८   | ६४३२७    |
| १३आ.     | १३९९० | अ. १७१६   | ज्ये. ३७४० | उ. ४४१४  | आलम्ब   | मे.     | २६०७   | ६४३२८    |
| १४लो.    | १४९९० | अ. १७१६   | वृ. ३७४०   | व. ३५४०  | चर      | ५५३३    | २६०७   | ६४३२९    |
| १५मं.    | १५९९० | अ. १७१६   | घ. ३७४०    | म. ३१४०  | गद      | वृ.     | २६०४   | ६४३३०    |

c (ह्यपूजा) वलिपूजा, वृश्चिकेबुधः २९।२९  
 गोवर्धनपूजा वृश्चिकेऽर्कः ४१।१ (मार्ग) संक्रान्तिः c  
 चन्द्रोदयः यम २ भानू २ (भाई टीका) (किजापूजा)  
 अनुराधायां बुधः २३ d पूषायां ३ भौमः ४८  
 भ. १६।५७ उ. ४९।३२ या. अनुराधायां रविः ५९ d  
 वृश्चिके गुरुः १४।५ e या. धनुषियायनार्तः ०।५  
 f विवाहः, भीष्म पञ्चकारम्भः घ.पं. नि. ४४।१४  
 हृषीकांगुनारायण, अखण्डदीपदर्शनम्, उपायां भौमः ३२  
 भ. ४।३० उ. ३६।१६ या. घ.पं. प्र. १।३५ द्विपू. ४।३० e  
 अ. ब्र.गो.पू.भौमः १० पू. उ.गुरुः १७ ज.स्वा. १३।३२  
 कुम्भाडसत्ययुगादिः (सकोचगुर्वने) i का.स्नातसमा. j  
 भ. ४१।२८ उ. ज्येष्ठार्धे बुधः २ ज्येष्ठार्धे शुक्रः २३  
 भ. ११।२४ या. हरिवोधिनी ११ वतम्, तुलनी f  
 प्रदोष व्रतम्, मन्वादिः रिडी क्षेत्रे ऋषिकेश खयात्रा g  
 विष्णुवैकुण्ठ १४h त्रिपु.उ. (सकिमनापुन्ही) शिववै. १४ i  
 भ. ३।५४ उ. ३१।४२ या. पू.उ. ब्र.चा. व्रतसमाप्तिः, मन्वा., h

| मं. | उ. | घ. | वा. | शु. | व. | रा. |
|-----|----|----|-----|-----|----|-----|
| १   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ३   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ४   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ५   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ६   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ७   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ८   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ९   | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १०  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ११  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १२  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १३  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १४  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १५  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १६  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १७  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १८  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| १९  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २०  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २१  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २२  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २३  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २४  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २५  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २६  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २७  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २८  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| २९  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |
| ३०  | ३३ | ३३ | ३३  | ३३  | ३३ | ३३  |



पूर्वादि दिशामा आवश्यकले गमनगर्दा खाने पदार्थ—पूर्वमा घ्यू, दधि. तिल, चावल, पश्चिम, माछा, उत्तरमा दुध, पूर्वदि वारमा—रविवार सिकनीं, सोमवार पायस, मंगलवार मद, बुधवार तातेको दूध, गुरुवार दही शुक्रवार काचो दूध, शनिवार तिल चामल, प्रतिप्रदादि तिथिमा प्रतिपदामा चर्क पत्र द्वि चौलानी, तृ. मा घ्यू, चतु. मा जीको विकार, पं. मा मूगो, प. मा सुन्पानी, स. मा मालपूवा, अ. मा विजोरा, न. मा जल, द. मा मूत्र, ए. मा युवात्र, द्वा. मा पायस, १३ मा गुंड, च. मा. रगत, पू. मा, मूगो, खाई बाहेरी गमन गर्नु शुभ । भक्षवस्तु भये खानु, अभक्षवस्तुभये हेर्नु,

१ सु. ८, १ बु. ८, ५ व. ८

श्रीशाके १६०४ श्रीसंवत् २०३६ मार्गशीर्ष कृष्णपक्षः (कछलागा) पा० म. आ. पु. ति. स्वा. ज्ये. मू. (दिसम्बर १२) दक्षिणायन-हेमन्तर्तुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.   | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगा:    | चन्द्रा. | वि. | मा. | मू. | उ. | ता. |
|----|-----|-----|----|----|-------|----|----|-------|----|----|-----|----|----|----------|----------|-----|-----|-----|----|-----|
| १६ | बु. | १५  | ४  | २७ | रो.   | २६ | ३० | वि.   | २२ | ३९ | बा. | २६ | ५८ | शुभ      | वृ.      | २६  | ३   | ६   | ४८ | १   |
| १७ | बु. | २७  | ४  | ५  | मू.   | ३० | ५३ | सा.   | ३५ | १० | ते. | २१ | ४१ | मङ्गु    | शु.      | २६  | १   | ६   | ४८ | २   |
| १८ | शु. | ३८  | ५  | ५  | आ.    | ३८ | ५९ | जु.   | २७ | ०३ | व.  | १६ | ०  | पञ्च     | मि.      | २६  | ०   | ६   | ४८ | ३   |
| १९ | श.  | ४३  | ७  | ८  | पु.   | ३४ | ६७ | जु.   | १६ | ०७ | व.  | १० | ६  | छत्र     | शु.      | २६  | ५८  | ६   | ४८ | ४   |
| २० | आ.  | ५३  | १० | ९  | नि.   | ३० | ७३ | शु.   | ११ | ३६ | को. | ५३ | ३३ | श्रीवत्स | क.       | २५  | ५०  | ६   | ४९ | ५   |
| २१ | सो. | ६२  | १० | ९  | अ.    | १६ | ८१ | ऐ.    | ५३ | ४३ | श.  | ५३ | २२ | सौम्य    | शु.      | २५  | ५६  | ६   | ४९ | ६   |
| २२ | मं. | ७२  | १५ | ५  | म.    | १० | १२ | वि.   | ४९ | ४५ | वा. | ४८ | ४७ | काल      | सि.      | २५  | ५४  | ६   | ४९ | ७   |
| २३ | बु. | ८१  | २३ | ३  | पु.   | १० | २८ | प्री. | ४० | ३३ | तै. | ४४ | ५० | स्थिर    | शु.      | २५  | ५३  | ६   | ५० | ८   |
| २४ | बु. | ९२  | २६ | ३  | उ.    | ८  | ३६ | आ.    | ३८ | ३३ | व.  | ४८ | ६  | मातङ्ग   | क.       | २५  | ५१  | ६   | ५० | ९   |
| २५ | शु. | १०  | २९ | ३  | ह.    | ३७ | ४१ | गौ.   | ३३ | ३९ | व.  | ४० | २१ | अमृत     | शु.      | २५  | ५०  | ६   | ५० | १०  |
| २६ | श.  | ११  | ३१ | ३  | चि.   | ८  | ४३ | गौ.   | ३० | १  | को. | ३९ | ४८ | काण      | बु.      | २५  | ४८  | ६   | ५० | ११  |
| २७ | आ.  | १२  | ३१ | ०  | स्वा. | ९  | ४८ | अ.    | २७ | ०० | ग.  | ४० | ३१ | लम्ब     | शु.      | २५  | ४७  | ६   | ५१ | १२  |
| २८ | सो. | १३  | ३१ | ३  | वि.   | १० | ५३ | सु.   | २० | ४४ | भ.  | ४२ | ०० | मित्र    | बु.      | २५  | ४६  | ६   | ५१ | १३  |
| २९ | मं. | १४  | ३३ | ११ | अ.    | १६ | ५८ | अ.    | ०५ | २७ | च.  | ४५ | ४२ | वज्र     | बु.      | २५  | ४५  | ६   | ५१ | १४  |
| ३० | बु. | ३०  | १७ | ३६ | ज्ये. | १० | ७० | उ.    | ३५ | १  | कि. | ४९ | ५६ | छवाक्ष   | शु.      | २५  | ४६  | ६   | ५० | १५  |

१ शानकोटे महालक्ष्मी यात्रा, (दिसम्बर १२ ता. २१)  
 २ श्री ५ बड़ा महारानि शुभवर्षाभिवृद्धिः पश्चिमोदितः  
 ३ भ. १६१० उ. ४३१५ या. ज्येष्ठशरविः ६ मकरभौमः  
 ४ पश्चिमोदितोदधः ३१ २०५२ धनुषि बुधः ५५१५५  
 ५ अनुराधायां १ गुरुः २०  
 ६ भ. २५१२० उ. ५३१३२ या. धनुषि बुधः ५५१४९  
 ७ उपायां ३ भौमः १९ अ. व्रतम् भैरवोत्पत्तिः  
 ८ भैरवाष्टमी  
 ९ भ. ४२१६ उ.  
 १० भ. १०१५६ या. श्री गृहेश्वरी यात्रा  
 ११ उत्पत्तिका ११ व्रतम्, उपायां ४ अभिजि भौमः ३६  
 १२ प्रदोष व्र. त्रिपुष्करः १४२ उ. १५० या. पूषायां बु. ३८  
 १३ भ. १११३ उ. ४२१३२ या. (बालाचह्नेरा)  
 १४ दर्शश्राद्धम् वाला १४ शतबीजारोपणम्  
 १५ स्नानदानादौ अमावास्या, सूर्यग्रहणमन्त्रप्रासः

अब वाला चतुदश्या कृत्यक्रमः हम. प्रा. सुवर्णरत्नातुल्यं ब्रह्ममकराक्षपत् । मृगस्थली परिराम्य पुनर्जन्म न विद्यत । मासमासनियमा-  
 र्गमास भर एकभक्त (एक छाकवाते) व्रत पञ्चमी तागपूजा पठ्ठी अष्टमीमा गोसूत्राहारी व्रत लवण दान, धान्य-पर्वतदान तवात्र भोजनको  
 हात्म्य छ । नवात्रप्रश्न मन्त्रः—प्राप्तीयात् दधिमयक्त नवं विप्रभिमन्त्रितम् । गृहित्वा ब्राह्मणानुशां सदधि प्राणवेशवम् । अत्र प्रतिपदीः  
 जटार्थदानमन्त्रः—रामायवरदे देवि सीताय प्रियवादिनी । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं त्रिजटायै नमोतमः । यमदंष्ट्र प्रणंसा-कार्तिका ८ दिन यमदंष्ट्र  
 लेच्छ, यसमा अल्पाहागी भणमा निरामय होइन्छ ।

| ३५  | मं. | बु. | ह. | शु. | वा. | रा. |
|-----|-----|-----|----|-----|-----|-----|
| मा. | ७   | ९   | ८  | ७   | ८   | ६   |
| २२  | २१  | ३   | ६  | ३   | १   | ७   |
| ग.  | २९  | ४३  | ४  | ५१  | ७   | २३  |
| ३०  | ३१  | ७   | ४९ | १३  | ५५  | ५२  |
| ४०  | ३१  | ४४  | ९५ | १३  | ७५  | ६   |
| ८१  | ४२  | २२  | १८ | ३४  | ११  | ११  |

१८ मं. १०, १८ बु. ९, २१ शु. ९

| १० | मं. | बु. | शु. | के. | ७३. |
|----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १० | ११  | ५   | ६   | ५   | ४   |
| १२ | १   | २   | ३   | ४   | ५   |

मं. मा. उ. बु. मा. १६ उ. बु. मा. उ. शु. मा. १७ उ. प. श. मा. उ.



३७ म. वृ. वृ. शु. ज. रा.

|   |   |   |
|---|---|---|
| ३ | ६ | १ |
| ४ | ९ | ५ |
| २ | ८ | ७ |

म. मा. उ. वृ. मा. उ., वृ. मा. उ.  
श. मा. उ. प., श. मा. उ.

श्रीशके १९०४ श्रीसंवत् २०३९, पीप कृष्ण १३: (थिल्लागो) प.० पु. वि. मू. चि. स्वा. पू. वा. उ. पा. (दिस० १२ जन० १) दधिणायनं हेमन्तर्तुः

| ग. | वा. | ति. | घ. | प.  | न.    | घ. | प.    | क.    | घ. | प.  | योगाः | चन्द्ररा. | दि.    | मा.     | सु. | उ. | ता. |
|----|-----|-----|----|-----|-------|----|-------|-------|----|-----|-------|-----------|--------|---------|-----|----|-----|
| १६ | शु. | १२० | ५६ | पु. | ४४    | ५० | गो.   | ३४    | २० | ते. | ४७    | ५०        | तुम्ब. | ३०      | ५२  | २५ | ४२  |
| १७ | शु. | २१५ | २  | ति. | ४०    | ६  | वै.   | २६    | ३३ | व.  | ४२    | १०        | मित्र. | क.      | २५  | ४४ | ६५  |
| १८ | आ.  | ३   | ११ | अ.  | ३६    | ४८ | वि.   | १८    | ५१ | ब.  | ३६    | २६        | वज्र.  | ३६      | ४८  | २५ | ४६  |
| १९ | सो. | ४   | ३६ | उ.  | ३३    | १९ | प्री. | ११    | २४ | को. | १३    | २९        | ध्वनि. | मि.     | १२  | ५४ | ६५  |
| २० | मं. | ६   | ५४ | ५४  | ५०    | ०  | आ.    | ३६    | ५५ | ग.  | २६    | ५५        | धूम्र. | ४४      | ५९  | २५ | ५०  |
| २१ | वृ. | ७   | ५१ | ३५  | उ.    | २५ | २६    | शो.   | ५२ | १९  | भ.    | २३        | १६     | वर्ध.   | कं. | २५ | ५२  |
| २२ | वृ. | ८   | ४९ | २६  | ह.    | २७ | २१    | अ.    | ४७ | २७  | वा.   | २०        | ३२     | रक्ष.   | ५०  | २२ | २५  |
| २३ | शु. | ९   | ४८ | २४  | चि.   | २७ | २२    | सु.   | ४३ | २१  | ते.   | १५        | ५५     | मुसल.   | तु. | २५ | ५६  |
| २४ | शु. | १०  | ४८ | ३५  | स्वा. | २८ | ३७    | घृ.   | ४० | २०  | व.    | १५        | ३१     | मिद्धि. | तु. | २५ | ५७  |
| २५ | आ.  | ११  | ५० | १०  | वि.   | ११ | ६     | शु.   | ३५ | ३५  | व.    | ११        | २४     | उत्पात. | १५  | २९ | २५  |
| २६ | सो. | १२  | ५२ | ५७  | अ.    | ३४ | ४८    | गं.   | ३७ | ३७  | को.   | २१        | १३     | मानस.   | वृ. | २५ | ५९  |
| २७ | मं. | १३  | ५६ | ५०  | ज्ये. | ३९ | ३५    | वृ.   | ३७ | २९  | ग.    | २४        | ५३     | मुद्गर. | ३१  | ३५ | २६  |
| २८ | वृ. | १४  | ६० | ०   | म.    | ४५ | २३    | घृ.   | ३८ | ६   | भा.   | २९        | १२     | ध्वज.   | ध.  | २६ | २   |
| २९ | वृ. | १५  | १५ | ५   | पु.   | ५१ | ४१    | व्या. | ३९ | १२  | न.    | ३४        | १४     | धाता.   | ध.  | २६ | ४   |
| ३० | शु. | १६  | २५ | ४   | ल.    | ५८ | १६    | ह.    | ४० | २५  | कि.   | २९        | २०     | भानन्द. | वा. | २० | २६  |

b विराज शुभ वर्षाभिर्वृत्तिः, (दिगिपूजा) अभिजिति  
 f श्री ५ पृथ्वी जयन्ती, 1 माधव नारायण मेला m  
 म. ४२१० उ. (जनवरी १ ता. ३१ सन् १९८३०  
 म. ९१८ या. धनिष्ठायां १ भीमः ७ c प्रारम्भः)  
 वक्रा बुधः २६ d शुक्रः ५३, आर्द्रायां  
 म. ५४५४ उ. त्रिपुष्करः ५४५४ उ. अभिजिति d  
 म. २३१६ या. d शुक्रः ५९, आर्द्रायां १ राहुः मूले ३ केतुः ३४  
 अष्टमी वतम्, धनिष्ठायां २ भीमः ३१ अनुराधायां c  
 श्रावणे शुक्रः ३८ ० ३ गुरुः ४ पश्चिमास्तौ बुधः ३५  
 म. १८३१ उ. ४८ ३८ या. श्री ५ महाराजा-b  
 सफला ११ व्रतम् a वृत्तिः शुक्र २० स्वात्यां २ ह  
 कुम्भे भीमः ४३१५ पुनर्धनुषिबुधः २१४५  
 म. ५६१५० उ. प्रदोष व्रतम् उषायां रविः १३, f  
 म. २९११२ या. (दिशा चह्नेपूजा) h क्षतिः ४९,  
 दर्शश्चादम्, m पीपी ३० पूषायां बुधः २०  
 मकरेऽर्कः २९१२ स्थानदानादी अमावास्या, आर्षाद्दे 1

| २९  | स. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | शु. | रा. |
|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| को. | २  | ९   | ७   | ६   | ६   | २   |     |
| २०  | २० | २५  | २   | ९   | ६   | ९   |     |
| ग.  | ६  | २२  | ४   | ३   | २   | ४   | ५   |
| ३   | ५  | १३  | १   | ६   | २   | ६   | ०   |
| ४   | ६  | ४   | ६   | १   | ७   | ३   | ३   |
| १३  | २  | ३   | ५   | ४   | ७   | ४   | १   |

| ३०  | स. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | शु. | रा. |
|-----|----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| को. | १० | ८   | ७   | ९   | ६   | २   |     |
| २७  | २७ | ०   | २   | १   | १   | १   | ०   |
| ग.  | १६ | ४९  | ३   | ७   | ४   | १   | ३   |
| ३   | ४  | ३   | २   | ०   | ३   | २   | ७   |
| ४   | ५  | १   | ४   | ४   | १   | ७   | २   |
| ११  | १  | २   | २   | ३   | २   | ७   | ६   |

३०म्. १०, २६ मं. ११, बु. ९

| मं. बु. शु. | वृ. ८     |
|-------------|-----------|
| ११          | सू. के. ९ |
| १२          | श. ७      |
| १           | ६         |
| २           | रा. ३     |
| ४           | ५         |

मङ्गलीकरण विष्णु स्तोत्रम् । मंगलं भगवान् विष्णुमंगलं गरुडध्वजः । मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायनो हरिः । मंगललक्ष्मण भ्राता मंगल जानकी  
 रः । मंगलं सुन्दरी रामो मंगलं हनुमत्प्रियः । १२॥ मंगलं परमानन्दो मंगलं परमेश्वरः । मंगलं श्री पद्मनाभो मंगलं पद्मलोचनः ॥ ३॥ मंगलं कृष्ण मिथु  
 मंगलं विश्वनाथः । मंगलं रत्नदानन्दो मंगलं जगदीश्वरः ॥ ४॥ मंगलं श्री रंगनाथो मंगलं पूरुषोत्तमः । मंगलं कमलाकांतो मंगलं भक्त वत्सलः । मंगलं  
 मलानन्दो मंगलं कमलाक्षः । मंगलं भगवान्कृष्णो मंगलं विश्वजिवनः ॥ ५॥ मंगलं माधवोद्गीरो मंगलं धराणीधरः । मंगलं देवकी पुत्रो शेष पृष्ठ ३८ या



|    |     |     |    |     |     |    |     |
|----|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|
| ६१ | मू. | मं. | व. | वृ. | शु. | श. | रा. |
| मा | १   | १०  | ५  | ७   | ९   | ६  | २   |
| १  | ४   | ६   | २३ | १०  | १४  | १० | १०  |

|    |    |    |     |     |     |
|----|----|----|-----|-----|-----|
| १  | २  | ३  | ४   | ५   | ६   |
| ७  | ८  | ९  | १०  | ११  | १२  |
| १३ | १४ | १५ | १६  | १७  | १८  |
| १९ | २० | २१ | २२  | २३  | २४  |
| २५ | २६ | २७ | २८  | २९  | ३०  |
| ३१ | ३२ | ३३ | ३४  | ३५  | ३६  |
| ३७ | ३८ | ३९ | ४०  | ४१  | ४२  |
| ४३ | ४४ | ४५ | ४६  | ४७  | ४८  |
| ४९ | ५० | ५१ | ५२  | ५३  | ५४  |
| ५५ | ५६ | ५७ | ५८  | ५९  | ६०  |
| ६१ | ६२ | ६३ | ६४  | ६५  | ६६  |
| ६७ | ६८ | ६९ | ७०  | ७१  | ७२  |
| ७३ | ७४ | ७५ | ७६  | ७७  | ७८  |
| ७९ | ८० | ८१ | ८२  | ८३  | ८४  |
| ८५ | ८६ | ८७ | ८८  | ८९  | ९०  |
| ९१ | ९२ | ९३ | ९४  | ९५  | ९६  |
| ९७ | ९८ | ९९ | १०० | १०१ | १०२ |

|    |    |   |
|----|----|---|
| ११ | ३  | ५ |
| १२ | १० | ८ |
| १  | ७  | ६ |

मं. मा. उ. बु. १२ मा. पड. वृ.  
मा. उ. श. मा. उ. प. श. मा. उ.

श्री शके १९०४ सं० २०३९ फाल्गुन कृष्णपक्षः (नृनृगा) पा. स्वा.म.पूषा.ध.४ (जनवरी १ फरवरी २) उत्तरायण-शिशिर

| ग.      | वा. | ति. | घ. | प.    | न. | घ. | प.    | यो. | घ.  | प. | क. | प्र.   | प.  | योगा. | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सु. | उ. | ता. |
|---------|-----|-----|----|-------|----|----|-------|-----|-----|----|----|--------|-----|-------|-----------|-----|-----|-----|----|-----|
| १५      | सा. | १४  | ४१ | ति.   | ३३ | आ. | २४    | ३१  | वा. | २० | ४० | मित्र  | ५७  | २६    | २६        | ४१  | ६   | ४०  | २९ |     |
| १६      | आ.  | २४  | २९ | म.    | ५३ | ५२ | सो.   | २७  | १   | १५ | ९  | मुद्गर | सि. | २६    | ४४        | ६   | ३९  | ३०  |    |     |
| १७      | लो. | ३३  | ७० | बु.   | ५० | ५२ | शो.   | १९  | ५३  | १० | ४  | ध्वज   | सि. | २६    | ४८        | ६   | ३८  | ३१  |    |     |
| प्र. १८ | मं. | ४३  | २६ | उ.    | ४८ | ३८ | अ.    | १३  | १८  | ५  | ३८ | घाता   | ५१  | २६    | ५२        | ६   | ३८  |     |    |     |
| १९      | बु. | ५३  | २४ | ह.    | ४७ | २९ | मु.   | ७   | ३३  | ६  | ३३ | आनन्द  | कं. | २६    | ५६        | ६   | ३७  |     |    |     |
| प्र. २० | वृ. | ६२  | १७ | चि.   | ४७ | १९ | घ.    | ६   | १७  | ५७ | ४८ | चर     | १७  | १६    | २७        | ०   | ६२  |     |    |     |
| २१      | शु. | ७२  | २० | स्वा  | ४८ | ७  | ग.    | ५४  | ४९  | ५७ | ३० | गद     | तु. | २७    | ४         | ६   | ३५  |     |    |     |
| २२      | श.  | ८२  | ४० | वि.   | ५० | २१ | वृ.   | ५२  | ३३  | ५८ | २८ | शुभ    | ३४  | ४७    | २७        | ८   | ६३  |     |    |     |
| २३      | आ.  | १२  | १७ | अ.    | ५३ | ४८ | ध्रु. | ५१  | १८  | ६० | ०  | मृत्यु | वृ. | २७    | १२        | ६   | ३४  |     |    |     |
| २४      | सो. | १०  | ३२ | ज्ये. | ५८ | २४ | व्या  | ५०  | ५५  | ०  | ४३ | पद्य   | ५८  | २४    | २७        | १६  | ६३  |     |    |     |
| २५      | मं. | ११  | ३६ | ए.    | ६० | ०  | ह.    | ५१  | २२  | ४  | ७  | छत्र   | घ.  | २७    | २०        | ६   | ३३  |     |    |     |
| प्र. २६ | ह.  | १२  | ४० | पू.   | ४  | १  | व.    | ५२  | २२  | ८  | ३० | ध्वज   | घ.  | २७    | २४        | ६   | ३३  |     |    |     |
| २७      | वृ. | १३  | ४६ | १     | १० | १४ | मि.   | ५३  | ४३  | १६ | ३२ | घाता   | २६  | ५३    | २७        | २७  | ६३  |     |    |     |
| २८      | शु. | १४  | ५१ | ३     | १८ | ५० | व्य.  | ५५  | ८   | १८ | ५५ | आनन्द  | म.  | २७    | ३१        | ६   | ३०  |     |    |     |
| २९      | आ.  | १०  | ५६ | ४     | २३ | १८ | व.    | ५६  | १३  | २४ | ९  | मित्र  | ५६  | १६    | २७        | ३०  | ६२  |     |    |     |

माघ कृष्ण फाल्गुन कृष्ण उभयात्मक पक्ष

म. १०४ उ. ३७४० या.

मङ्गल ४ (फरवरी २ ता० २८) शतमे ४ भौमः ७  
१ मास समाप्तिः घ.पं. प्र. ५६१६

म. २८१७ उ. ५७४८ या.

४ बुटोल क्षेत्रे त्रिवेणी मेला, द्वापर युगादिः, अय-१

अष्टमी व्रतम्, पूभायां १ भौमः २०

घनिष्ठायां रविः २१ पुनरुफायां बुधः ३१

म. ०४३ उ. ३२१९ या.

९ शुक्रः ३७

विजया ११ व्रतम्, षडतिला ११ व्रतञ्च, पूभायां ९

पूभायां २ भौमः ४४ पुनर्मकरे बुधः १९१३०

म. ४६१३ उ. प्रदोष व्रतम्

म. १८५५ या. महाशिवरात्रि १८ व्रतम्, (शिलाचहे)

अमावस्या दर्शश्चाष्टमं कुम्भमेवर्जः ५५१२० माघी ३० ६

| ४३  | सु. | म. | बु. | शु. | घ. | रा. |
|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|
| मा. | ११० | ८  | ७१० | ६   | २  |     |
| १८  | १८  | १७ | २२  | १४  | ११ | १०  |
| ग.  | ४२  | २६ | ५६  | ३७  | ३३ | ५७  |
| ३१  | ४१  | ३४ | ५८  | ४३  | २१ | ७   |
| ४९  | ६०  | ४५ | ४३  | ९   | ७४ | ०   |
| २०  | ५१  | ३३ | ४५  | ७   | ४४ | ५४  |

| ४४  | सु. | म. | बु. | शु. | घ. | रा. |
|-----|-----|----|-----|-----|----|-----|
| मा. | ११० | ८  | ७१० | ६   | २  |     |
| २५  | ५५  | २२ | २९  | १५  | २० | ११  |
| ग.  | ५०  | ३८ | २४  | ४०  | १५ | १७  |
| ३२  | ५३  | २३ | ३१  | ४०  | ४१ | ५१  |
| ४९  | ६०  | ४५ | ४३  | ९   | ७४ | ०   |
| २०  | ५१  | ३३ | ४५  | ७   | ४४ | ५४  |

मं.सा.उ. बु.मा.उ. वृ.मा.उ.  
शु.मा.उ.प. श.मा.उ.

|         |        |
|---------|--------|
| शु.म.११ | बु.९क. |
| १२      | सु.१०  |
| २       | रा.३   |
| रा.३    | ५      |

२९ सु. ११, २६ बु. १०

अथ सप्तमोचर वाट प्रहाराको दान जप गर्तपदो सुयको—गह गुड समुरोतायो रक्तचंदन रक्तवस्त्र सुन गो माणिक दान जप ७००० शिवपूजा ।  
चन्द्रमाको निमित्त वंशपात्र (पग हुं ओ आदि) कपूर शंख श्रीखंड दही चामल मोति चांदी सेटी गो दान जप १०००० देवी पूजा । मंगल निमित्त—  
गुह गुड समुरो रक्त चम्पक रक्त वस्त्र सुन रत्नोबहुर गुगु दान जप १०००० गणेश पूजा । बुध का निमित्त मृगीमास धूक स्वूरी हाति दान हरियो  
वस्त्र गुत दान जप १८००० विष्णु पूजा । बृहस्पतिको दान—पहेलो घान हने दो सुन त्रिनी पीतवस्त्र सुत पुष्प राजमणि दान जप १८००० कुल देवता  
पूजा । शुकको दान—चावल श्रीखण्ड चांदी चित्र वस्त्र सुनहीरा दान जप १५००० इन्द्राणी पूजा । शनिको दान मास तिलतेल गहन फला पू. ३९ मा देखतु



श्री शके १९०४ श्रीमद्वत् २०३२ अधिकफाल्गुनशुक्लपक्षः (अनिलाश्व) पा. घ. श. पू. भा. आ. पु. ९ (फरवरी २) उत्तरायणं निशितुः

| रा. | वा. | ति. | घ. | प. | न. | श. | प. | यो. | घ. | प. | क. | ख. | प. | योगः   | च.   | रा. | दि. | मा. | सु. | उ.   | ता.  |
|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|--------|------|-----|-----|-----|-----|--|--|
| १   | जा. | १   | १० | ०  | ०  | २९ | १४ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | मातङ्ग | कु.  | २७  | ३७  | ६२२ | १३  | पू. भायां ३ भौमः ५२ कुम्भ (फाल्गुन) संक्रान्ति, c  |  |
| २   | फा. | १   | ११ | ०  | ०  | ३० | १५ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | अमृत   | कुं. | २७  | ३९  | ६२५ | १४  | चन्द्रोदयः अभिजितिवृधः ३१ वक्रो दानिः १७           |  |
| ३   | म.  | २   | १२ | ०  | ०  | ३१ | १६ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | काण    | २२   | २१  | २७  | ४१  | ६२८ | १५   | त्रिपुष्करः ४१८ या. c अधिक सागराभ्य,           |
| ४   | च.  | ३   | १३ | ०  | ०  | ३२ | १७ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | तुम्ब  | मी.  | २७  | ४३  | ६२८ | १६  | भ. ३६५० उ. श्रावणेवृधः ४५ ज्येष्ठर्क्षे १ गुमः d   |  |
| ५   | प.  | ४   | १४ | ०  | ०  | ३३ | १८ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | गित्र  | ४२   | ४४  | २७  | ४६  | ६२७ | १७   | भ. ७१५ या. घ. पं. ति. ४२४४ बुधस्वाभिजिति c     |
| ६   | शु. | ५   | १५ | ०  | ०  | ३४ | १९ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | वज्र   | मे   | २७  | ५०  | ६२६ | १८  | मीने भौमः २२३९ ॥ त्रिपुष्करः २१२२ य.               |  |
| ७   | म.  | ६   | १६ | ०  | ०  | ३५ | २० | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | स्वाध  | ५६   | ५१  | २७  | ५४  | ६२५ | १९   | त्रिपुष्करः ४२१६ उ. शतभिषायां रविः ३० उभायां i |
| ८   | म.  | ७   | १७ | ०  | ०  | ३६ | २१ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | धुञ्ज  | वृ.  | २७  | ५८  | ६२५ | २०  | भ. २१२२ उ. ३०१९ या. अष्टमीव्रतम्, रविः ७ ॥         |  |
| ९   | नि. | ८   | १८ | ०  | ०  | ३७ | २२ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | वर्ज   | वृ.  | २८  | २   | ६२४ | २१  | i शुक्रः २३ मीने मायनाकः १५ नेपाळ प्रजासत्त्व ५    |  |
| १०  | मं. | ९   | १९ | ०  | ०  | ३८ | २३ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | रश्म   | ६१   | ५२  | २८  | ३   | ६२३ | २२   | उभायां १ भौमः ४० i २ भौमः ५७                   |
| ११  | कु. | १०  | २० | ०  | ०  | ३९ | २४ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | मुसल   | मि.  | २८  | १०  | ६२२ | २३  | भ. १६१२ उ. ४३१४ या. पदमिनि ११ व्रतम्,              |  |
| १२  | व.  | ११  | २१ | ०  | ०  | ४० | २५ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | सिद्धि | १२   | ४६  | २८  | १४  | ६२१ | २४   | d ३२, मीनेशुक्रः ४०१४१ c लग्न २०               |
| १३  | श.  | १२  | २२ | ०  | ०  | ४१ | २६ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | उत्पात | क.   | २८  | १८  | ६२० | २५  | प्रतोप व्रतम्, धनिष्ठाप वृधः ८ पूर्वर्क्षो वृधः १२ |  |
| १४  | श.  | १३  | २३ | ०  | ०  | ४२ | २७ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | नागम   | १८   | ३७  | २८  | २३  | ६२० | २६   | भ. २५४२ उ. ५३१० या. पूर्णिमाव्रतम्, उभायां :   |
| १५  | आ.  | १४  | २४ | ०  | ०  | ४३ | २८ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | मृगश   | पि.  | २८  | २७  | ६१९ | २७  | (अनलापन्ती) ६ दिक्मस्तथा श्री ५ त्रिभुज जयन्ती     |  |

अथापूषदात नक्षत्रः — अश्विनामक गङ्गापुत्रः समप्रपूषोत्तम नामधेय मासि विपुललक्ष्मी पुत्रावापु रारोग्यैश्वर्य सुविनमुक्तिप्राप्ति पूर्वकं पृथ्वी-  
दानं सकल प्राप्ते नक्षत्रानामोद्य मलशुद्धिदाया यथामिनितापचारैर्विष्णवादि श्रीपत्यस्त त्रयस्त्रिंशद्देवतात्मकं विष्णुरूपि सहस्रत्राशु श्रीमनवत्पूषोत्तम-  
नारायण पूजन पूर्वकं नक्षत्रानां पर्वणिमिता यथास्वपदपूषेपेन कश्यपपुत्रमुवर्णं धृतं ताम्बूल क्षत्रिणादि सोपस्करं पूषोत्तम देवताकमपुः शोत्रायापुः  
धर्मणे ब्राह्मणाय पूषोत्तमस्वरूपाय सृष्टिनाय तुष्यमह संप्रदेवे ॥ इति अकरेदयत् ॥ प्रार्थना मन्त्रः—विष्णुरूपिसहस्रत्राशु सर्वपापप्रणाशनः ॥ अनूपात्र  
प्रदानेन समपापं व्यपोहत् ॥ कारयय जं द्विज मास्कर प्रतिरूपकः ॥ दानेनानेन पुत्राश्च संपदश्चत्रिद्वय ॥ यस्थहस्ते गदाचक्रौ

| रा. | वा. | ति. | घ. | प. | न. | श. | प. | यो. | घ. | प. | क. | ख. | प. | योगः   | च.   | रा. | दि. | मा. | सु. | उ.   | ता.  |
|-----|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|--------|------|-----|-----|-----|-----|--|--|
| १   | जा. | १   | १० | ०  | ०  | २९ | १४ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | मातङ्ग | कु.  | २७  | ३७  | ६२२ | १३  | पू. भायां ३ भौमः ५२ कुम्भ (फाल्गुन) संक्रान्ति, c  |  |
| २   | फा. | १   | ११ | ०  | ०  | ३० | १५ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | अमृत   | कुं. | २७  | ३९  | ६२५ | १४  | चन्द्रोदयः अभिजितिवृधः ३१ वक्रो दानिः १७           |  |
| ३   | म.  | २   | १२ | ०  | ०  | ३१ | १६ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | काण    | २२   | २१  | २७  | ४१  | ६२८ | १५   | त्रिपुष्करः ४१८ या. c अधिक सागराभ्य,           |
| ४   | च.  | ३   | १३ | ०  | ०  | ३२ | १७ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | तुम्ब  | मी.  | २७  | ४३  | ६२८ | १६  | भ. ३६५० उ. श्रावणेवृधः ४५ ज्येष्ठर्क्षे १ गुमः d   |  |
| ५   | प.  | ४   | १४ | ०  | ०  | ३३ | १८ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | गित्र  | ४२   | ४४  | २७  | ४६  | ६२७ | १७   | भ. ७१५ या. घ. पं. ति. ४२४४ बुधस्वाभिजिति c     |
| ६   | शु. | ५   | १५ | ०  | ०  | ३४ | १९ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | वज्र   | मे   | २७  | ५०  | ६२६ | १८  | मीने भौमः २२३९ ॥ त्रिपुष्करः २१२२ य.               |  |
| ७   | म.  | ६   | १६ | ०  | ०  | ३५ | २० | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | स्वाध  | ५६   | ५१  | २७  | ५४  | ६२५ | १९   | त्रिपुष्करः ४२१६ उ. शतभिषायां रविः ३० उभायां i |
| ८   | म.  | ७   | १७ | ०  | ०  | ३६ | २१ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | धुञ्ज  | वृ.  | २७  | ५८  | ६२५ | २०  | भ. २१२२ उ. ३०१९ या. अष्टमीव्रतम्, रविः ७ ॥         |  |
| ९   | नि. | ८   | १८ | ०  | ०  | ३७ | २२ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | वर्ज   | वृ.  | २८  | २   | ६२४ | २१  | i शुक्रः २३ मीने मायनाकः १५ नेपाळ प्रजासत्त्व ५    |  |
| १०  | मं. | ९   | १९ | ०  | ०  | ३८ | २३ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | रश्म   | ६१   | ५२  | २८  | ३   | ६२३ | २२   | उभायां १ भौमः ४० i २ भौमः ५७                   |
| ११  | कु. | १०  | २० | ०  | ०  | ३९ | २४ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | मुसल   | मि.  | २८  | १०  | ६२२ | २३  | भ. १६१२ उ. ४३१४ या. पदमिनि ११ व्रतम्,              |  |
| १२  | व.  | ११  | २१ | ०  | ०  | ४० | २५ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | सिद्धि | १२   | ४६  | २८  | १४  | ६२१ | २४   | d ३२, मीनेशुक्रः ४०१४१ c लग्न २०               |
| १३  | श.  | १२  | २२ | ०  | ०  | ४१ | २६ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | उत्पात | क.   | २८  | १८  | ६२० | २५  | प्रतोप व्रतम्, धनिष्ठाप वृधः ८ पूर्वर्क्षो वृधः १२ |  |
| १४  | श.  | १३  | २३ | ०  | ०  | ४२ | २७ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | नागम   | १८   | ३७  | २८  | २३  | ६२० | २६   | भ. २५४२ उ. ५३१० या. पूर्णिमाव्रतम्, उभायां :   |
| १५  | आ.  | १४  | २४ | ०  | ०  | ४३ | २८ | ५   | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | मृगश   | पि.  | २८  | २७  | ६१९ | २७  | (अनलापन्ती) ६ दिक्मस्तथा श्री ५ त्रिभुज जयन्ती     |  |

६ म. १७, ४ शु. १७,

|    |             |
|----|-------------|
| १२ | १० वृ.      |
| १  | सू.मं.शु.११ |
| २  | वृ. =       |
| ५  | ७ शु.       |
| ६  |             |

मं. मा. उ. वृ. मा. १२ अ.  
वृ. मा. उ. शु. मा. उ. प.  
श. २ व. उ.

श्रावणे १९०४ श्रीसंवत् २०३९ अधिक फाल्गुन कृष्णपक्षः (अनलागा) पा.ह. स्वा. मू.पूषा.श.पूषा (फरवरी २ मार्च ३) उत्तरायणं शिशिरतुः

| नं. | वा. | ति. | घ. | प. | न.    | घ. | प. | यो.   | घ. | प. | क.  | घ. | प. | योगाः    | चन्द्रा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता. |  |  |
|-----|-----|-----|----|----|-------|----|----|-------|----|----|-----|----|----|----------|----------|-----|-----|-----|----|-----|--|--|
| १६  | सो. | १   | १५ | ३२ | पू.   | ११ | ४९ | वृ.   | ३० | ६  | तै. | ४३ | २९ | ध्वज     | २६       | २८  | २८  | ३२  | ६  | १८  | २८   |  |
| १७  | मं. | २   | ११ | २७ | उ.    | ९  | २५ | शु.   | २३ | ५  | व.  | ३९ | ५१ | घाता     | कं.      | २८  | ३६  | ६   | १७ | १   |  |  |
| १८  | बु. | ३   | ८  | १६ | ह.    | ७  | ५६ | ग.    | १८ | ४  | र.  | २७ | १३ | आनन्द    | ३७       | ४३  | २८  | ४०  | ६  | १६  | २  |  |
| १९  | बु. | ४   | ६  | १० | वि.   | ७  | ३० | बु.   | १४ | १५ | कौ. | ३५ | ४२ | चर       | तु.      | २८  | ४४  | ६   | १५ | ३   |  |  |
| २०  | शु. | ५   | ५  | १५ | स्वा. | ८  | ५  | म.    | १० | ४५ | ग.  | ३५ | २६ | गद       | ५४       | ३५  | २८  | ४८  | ६  | १५  | ४  |  |
| २१  | शु. | ६   | ५  | ३७ | वि.   | १० | ५  | व्या. | ८  | १४ | म.  | ३६ | २६ | शुभ      | वृ.      | २८  | ५३  | ६   | १४ | ५   |  |  |
| २२  | आ.  | ७   | ७  | १५ | अ.    | १३ | १७ | ह.    | ६  | ४४ | वा. | ३८ | ४१ | मृत्यु   | वृ.      | २८  | ५७  | ६   | १३ | ६   |  |  |
| २३  | सो. | ८   | १० | ७  | ज्ये. | १७ | ३७ | व.    | ६  | १० | तै. | ४२ | ५  | पक्ष     | १७       | ३७  | २९  | १   | ६  | १२  | ७  |  |
| २४  | मं. | ९   | १४ | ३  | मू.   | २३ | २  | सि.   | ६  | २५ | व.  | ४६ | २६ | छत्र     | ध.       | २९  | ५   | ६   | ११ | ८   |  |  |
| २५  | बु. | १०  | १८ | ५० | पू.   | २९ | ७  | व्य.  | ७  | २० | न.  | ५१ | २७ | श्रीवत्स | ४५       | ४५  | २९  | ९   | ६  | १०  | ९  |  |
| २६  | बु. | ११  | १४ | ५  | उ.    | ३५ | ४० | व.    | ८  | ४० | कौ. | ५६ | ४५ | सीम्य    | म.       | २९  | १३  | ६   | १० | १०  | १०   |  |
| २७  | शु. | १२  | २६ | २६ | श्र.  | ४२ | १२ | प.    | १० | ११ | ग.  | ६० | ०  | धूम्र    | म.       | २९  | १७  | ६   | १  | ११  | ११   |  |
| २८  | शु. | १३  | ३४ | २३ | ध.    | ४८ | १७ | णि.   | ११ | २७ | ग.  | १  | ५४ | वर्ष     | १५       | १४  | २९  | २१  | ६  | ८   | १२   |  |
| २९  | आ.  | १४  | ३८ | ३५ | श.    | ५३ | ३५ | नि.   | १२ | १६ | म.  | ६  | २९ | रक्ष     | कु.      | २९  | २५  | ६   | ७  | १३  | १३   |  |
| ३०  | सो. | ३०  | ४१ | ४६ | ग.    | ५७ | ५५ | मा.   | १२ | २२ | च.  | १० | १० | मुसल     | ४१       | ५०  | २९  | ३०  | ६  | ६   | १४   |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | ० १२५ या. कुम्भेश्वरः ०१५४                         |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. ३१५१ उ. ( मार्च ३ ता. ३१ ) त्रिपुष्करः ०        |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. ८१६ या. रेवत्यां शुक्रः १४                      |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | उभायां ३ भौमः २३                                   |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | ८ १०५ या.  |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | पूभायां रविः ४५, शतमेवृधः ४७                       |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. ५३७ उ. ३६२६ या. त्रिपुष्करः ५३७ उ. ८            |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | अष्टमी व्रतम्, रविः ७                              |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | उभायां ४ भौमः ४१                                   |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. ४६२६ उ. मृगशीर्ष ४ राहुमूले २ केतुः २७          |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. १८५० या.  |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | पद्मा ११ व्रतम्, रेवत्यां १ भौमः ७ शनि प्र. व्रतम् |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     |  |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. ३४२३ उ. व. प्र. प्र. १५१४ पूभायां बुधः ९ ८      |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भ. ६२९ या. अ. शेषेशुकः ११३० (अन्ता चह्लेपुजा)      |  |
|     |     |     |    |    |       |    |    |       |    |    |     |    |    |          |          |     |     |     |    |     | भौमवती वृषभः, शीतलः ४५२९ वृषायां नमः यावत्तमः      |  |

c ९।२५ या. कुम्भेबुधः ०।५४

भ. ३९।५१ उ. ( मार्च ३ ता. ३१ ) त्रिपुंकरः c

भ. ८।१६ या. रेवत्यां शुक्रः १४

उभायां ३ भौमः २३ d १०।५ या.

पुभायां रविः ४५, शतमेबुधः ४७

भ. ५।३७ उ. ३६।२६ या. त्रिपुंकरः ५।३७ उ. d

अष्टमी व्रतम्, रविः ७

उभायां ४ भौमः ४१

भ. ४६।२६ उ. मृगशीर्ष ४ राहुर्मूले २ केतुः २७

भ. १८।५० या.

पद्मा ११ व्रतम्, रेवत्यां १ भौमः ७ शनि प्र. व्रतम्

भ. ३९।२३ उ. व. पं. प्र. १५।१४ पूभायां बुधः ९ c

भ. ६।२९ या. अ. शिमेयशुक्रः ११।३० (अनला चह्ने पूजा)

मोमवती वृषाश्र. कीर्तकः ४५।२९ त्रयोत्तम माससमा

४७ सू. मं. बु. वृ. शु. श. रा.

फा. १० ११ १० ७ ११ ६ २

१७ १७ ८ १ १८ १६ १० ७

ग. ४ ५० २७ ६ १० ४६ १

३ १२ २८ १८ २० ४५ १६ २

५० ६० ४५ १० ६ ५ ७३ २

१६ १९ १३ ६ १५ २९ १४ ११

४८ सू. मं. बु. वृ. शु. श. रा.

फा. १० ११ १० ७ ११ ६ २

२४ २४ १४ १३ १८ २४ १० ६

ग. ५ १२ ५ ८ १९ ४३ ३० ३८

३ २९ ३३ १४ ३२ ५ ३३ ४५

५० ६० ४५ १० ९ ३ ७३ २

३३ ६ ६ २७ ४९ ६ ५६ १९

३० सू. १२, १७ बु. ११, २९ शु. १,

मं. शु. १२ १०

१ सु. बु. ११ ५ के.

२ ८ वृ.

रा. ३ ५ उषा.

४ ६

मं. मा. उ. बु. मा. अ. वृ. मा. उ.

शु. मा. उ. प. श. व. उ.

विवाह व्रतबन्धमा सूर्य-चन्द्र वृहस्पति जुराउदा

शुभस्थान पूज्यस्थान तिथित स्थान

यं ३।६।१०।११ १।२।५।७।९ ४।८।१२

न्द्र २।५।७।९।११ १।२।५।९ ४।८।१२

र २।५।७।९।११ १।३।१।०।६ ४।८।१२

सूर्य चन्द्रगुरु जुराउनेतरिका—कर्मगरिने कुमार वर, कन्याको शशिवाट गणना गर्नु पर्छ । कन्यालाई वृहस्पति कुमारलाई व्रतबन्धमा वृ.र.सु. जुराउनु । विवाहमा वरलाई वृ. जुराउनु पढेन सूर्यगुरु हुन्छ । चन्द्रमा सबैमा जुराउनु पर्छ । ४।१२ परे मा आवश्यक पढी विशेष पूजा गीसुवर्णदान गरेर गर्नु बाधापढेन ।



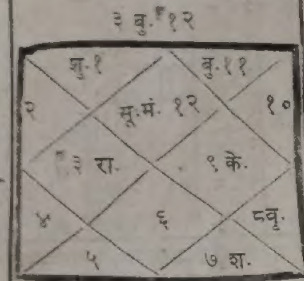
श्री शांके १९०४ श्री संवत् २०३९ शुद्ध फाल्गुन शुक्लपक्षः (चित्राश्व) पा रे मृ पु उफा ह ( मार्च ३ ) उत्तरायण वसन्तर्तुः

| ग.     | वा.  | ति. | घ.  | प. | न. | घ.    | प. | यो. | घ.  | प. | क. | घ.       | प.  | योगः | चन्द्र रा. | दि. | मा. | स. | उ. | ता. |
|--------|------|-----|-----|----|----|-------|----|-----|-----|----|----|----------|-----|------|------------|-----|-----|----|----|-----|
| १ मं.  | १४३  | ४५  | उ.  | ६० | ०  | शु.   | ११ | ३९  | कि. | १२ | ४५ | सिद्धि   | मी. | २९   | ३४         | ६   | ५   | १५ |    |     |
| २ बु.  | २४४  | २६  | उ.  | १  | २  | शु.   | १५ | ५५  | बा. | १४ | ५  | लुम्ब    | मी. | २९   | ३५         | ६   | ५   | १६ |    |     |
| ३ वृ.  | ३४३  | ५१  | रे. | २  | ५  | शु.   | ७  | ५५  | तै. | १४ | ५  | मित्र    | मी. | २९   | ४२         | ६   | ४   | १७ |    |     |
| ४ शु.  | ४४२  | ४   | अ.  | ३  | २  | शु.   | ३६ | ३६  | व.  | १२ | ५७ | वज्र     | मे. | २९   | ४६         | ६   | ३   | १८ |    |     |
| ५ आ.   | ५४१  | १०  | मं. | ४  | ५  | वि.   | ५३ | ३६  | व.  | १० | ३७ | वर्वाक्ष | १७  | ३५   | २९         | ५१  | ६   | २  | १९ |     |
| ६ आ.   | ६३५  | १५  | कृ. | ५  | ३  | प्रो. | ४७ | २४  | को. | ७  | १४ | धूम्र    | वृ. | २९   | ५५         | ६   | १   | २० |    |     |
| ७ सो.  | ७३०  | ३९  | मृ. | ५  | ४  | आ.    | ४० | ३७  | ग.  | ३  | ५६ | आनन्द    | २७  | ३२   | ३०         | ०   | ६   | ०  | २१ |     |
| ८ मं.  | ८२५  | २३  | आ.  | ५  | २  | मौ.   | ३३ | २२  | बा. | ५  | ३१ | चर       | मि. | ३०   | ४          | ६   | ०   | २२ |    |     |
| ९ बु.  | ९१९  | ३९  | पु. | ४  | ५  | जो.   | २५ | ५१  | तै. | ४६ | ४१ | गद       | ३१  | ५    | ३०         | ५   | ५   | २३ |    |     |
| १० वृ. | १०१३ | ४३  | ति. | ४  | ३  | अ.    | १८ | ४८  | व.  | ४० | ४३ | शुभ      | क.  | ३०   | १२         | ५   | ५   | २४ |    |     |
| ११ शु. | ११७  | ४४  | अ.  | ३  | ५  | सु.   | १० | १८  | व.  | ३४ | ५० | मृत्यु   | ३१  | ५३   | ३०         | १६  | ५   | २५ |    |     |
| १२ ज.  | १२४  | ४५  | म.  | ३  | ६  | घृ.   | ३४ | ४८  | को. | २९ | १४ | पद्म     | सि. | ३०   | २०         | ५   | ५   | २६ |    |     |
| १३ आ.  | १३५  | ४०  | पु. | ३  | २  | गं.   | ४८ | ४०  | ग.  | २४ | ६  | छत्र     | ४७  | १३   | ३०         | २४  | ५   | २७ |    |     |
| १४ सो. | १४४  | ३४  | उ.  | ३  | ०  | वृ.   | ४२ | २७  | म.  | १९ | ३७ | श्रीवत्स | कं. | ३०   | २८         | ५   | ५   | २८ |    |     |

( चैत्र ) संक्रान्तिः  
 चन्द्रोदयः रेवत्यां २ भौमः २८      ० १ शनिः ४५  
 घ. पं नि. २।५१, मीनेबुधः ३३।४४  
 भ. १२।५७ उ. ४२।४ या. उभायां रविः ६ स्वात्यां ८  
 उभायां बुधः २२  
 रेवत्यां ३ भौमः ५० द्विपु. ५।५८ उ.  
 भ. ३०।३९ उ. ५।८१ या. मेघे सायनांकः १२  
 भौमाष्टमी व्रतम्, होलीकारम्भः ८ चिरोत्थानम्  
 द भौमः १८  
 भ. ४०।४३ उ. भरण्यांशुकः १२  
 भ. ७।४४ या. आमलकी ११ व्रतम्, रेवत्यां ४ द  
 शनि प्रदोष व्रतम्, रेवत्यां बुधः ४३  
 भ. ५१।४० उ.      ० रात्री चौरदाहः (होलीपुन्ही)  
 भ. १९।३७ या. पूर्णिमा व्रतम् होली १५ मन्वादिः, ०

| सं. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | शु. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १   | १११ | १०  | ७   | ०   | ६   | २   |
| १   | १११ | २६  | १९  | ३   | १०  | ६   |
| ग.  | ५३२ | ५१  | ३   | १३  | १०  | १६  |
| ३   | १४१ | ०   | ३०  | २२  | १०  | २८  |
| ५०  | ५९  | ४४  | ११० | २   | ७२  | ३   |
| ५०  | ५०  | ५६  | १४  | १७  | ४७  | ३०  |

| सं. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | शु. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| १   | १११ | ११  | ७   | ०   | ६   | २   |
| ५   | २३२ | ३९  | ११  | ११  | १   | ५   |
| ३   | १५  | ४३  | ११  | ३३  | २७  | १२  |
| ५१  | ५९  | ४४  | १०८ | १   | ७२  | ३   |
| ११  | ३८  | ४६  | ५१  | ९   | २७  | ४   |



ग्रहगोचरवाट ग्रहको दान जप गर्तपदी—सू. को गहुँ गुड तामो रक्तचन्दन रक्तवस्त्र सुन गो माणिक दान जप ७००० शिवपूजन । चन्द्रमाको  
 वंशपात्र कपुर शंख श्रीखड्ग दहि चामल मोति चाँदी सेती गो दान जप ११००० देवी पूजा । मंगलको—गहुँ गुड मसुरी रक्तचन्दन रक्तवस्त्र रातो  
 वहर सुन मृगा दान जप १०००० गणेशपूजन । बुधको—मृगी मास घ्यू कस्तूरी हरियो वस्त्र हाता दाँत सुन दान जप ८००० विष्णुपूजन । अथ कृष्ण-  
 चतुर्दशी जननफलम्—चतुर्दशीको प्रथम १० घटी शुभत्यसपछि २० घटीमा पितृनाश, ३० सम्म मातृनाश, ४० मा मातुल नाश ५० घटीसम्ममा  
 वंशनाश ६० सम्म धननाश गर्छ, शान्ति गर्नु योग्य छ । चतुर्दशी को भोग घटी ६० मा घटी बढी भएमा अनुपात गरी ल्याउनु पर्छ ।

मं. मा. उ. वृ. मा. अ. वृ. मा.  
 उ. शु. मा. उ. प. श. व. उ.

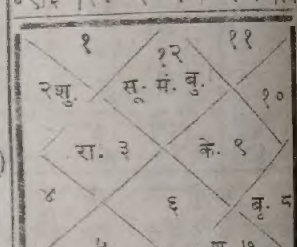
श्रीशाके १९०४ श्रीसंवत् २०३९ चैत्र कृष्णपक्षः (चिल्लागा) पा० ह.स्वा. मू. उषा. रे. श. आ. (मार्च ३ अप्रैल ४) उत्तरायणं वसन्तर्तुः

| श्रीशिवशक्तिस्तोत्रम् ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ श्रीब्रह्मणे नमः ॥ श्रीदेव्यै नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ श्रीचन्द्राय नमः ॥ श्रीशिवाय नमः ॥ श्रीशक्तिाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीविष्णवे नमः ॥ |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|
|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|--|

म. पु. विरवध्वजोत्थानम् घ. पं नि. २२५४  
 बसन्तादिः तैलाभ्यङ्गम चूत पुष्पप्राशनम्, प. उ. बु. ३७८  
 अश्विन्यां १ मेषेभीमः ४३५४ प. अ. भीमः ४३  
 भ. ११५४ उ. ४११६ या. नालामस्त्येन्द्रयात्रा, d  
 (अप्रैल ४ ता. ३०) तरेक्त्या रविः ३४ वक्रोगुहः १  
 c (धूलयात-वर्कयात) नाला मस्त्येन्द्रनाथस्नानम् k  
 भ. ४५५९ उ. अश्विन्यां २ भीमः ९ अश्विन्यां १ e  
 भ. १७५४ या. कृत्तिकायां शुक्रः २५ शुक्र १३३८  
 अष्टमी व्रतम्, शीतलाष्टमी, (दू दू च्यां च्यां)  
 k (नालान्धव) द्विपु. ४४१२९ उ. १ अश्विन्यां ४ भीम c  
 भ. ३२२० उ. अश्विन्यां ३ भीमः ४० वृषे- f  
 भ. ४५८ या घ. पं. प्र. ३४१३ मेषेबुधः २५५४  
 पापमोचनी ११ व्रतम् देवपूतनेदेशोद्धार पूजा,  
 प्रदोष व्रतम्, त्रिपुंकरः १२४८ उ. १३५३ या.  
 भ. १६५७ उ. ४७५३ या पिचाश १४ (पासाचहे)  
 दर्श. श्राद्धम्, अश्वयात्रा ३०, मन्वादिः भरण्यां बुध ४।  
 स्नानदानादौ अमावास्या, i

| सू. | मं. | बु. | उ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|
| ११  | ०   | ११  | ७  | ०   | ६  | २   |
| १५  | १४  | ०   | २२ | १९  | २० | ९   |
| ग.  | ५९  | २६  | ९  | २१  | ४  | १८  |
| ३   | ४   | १५  | ०  | २८  | ३८ | ५५  |
| ५१  | ५९  | ४४  | १० | ४   | ७२ | ४३  |
| ३०  | २१  | ३३  | २९ | ३३  | ३३ | ११  |

| सू. | मं. | बु. | उ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|----|-----|----|-----|
| ११  | ०   | ०   | ७  | ०   | ६  | २   |
| १५  | १४  | ५   | ३  | १९  | २८ | ५   |
| ग.  | ५४  | २०  | ५५ | १५  | २२ | ४८  |
| ३   | ३   | १९  | ५८ | ३७  | ५६ | ३८  |
| ५१  | ५९  | ४४  | १७ | १७  | १४ | ३   |
| ४९  | ३   | २१  | २  | ५४  | ११ | ११  |



मंगलं पुष्टिवर्द्धनः ॥६॥ मंगलं मधुरानाथो मंगलं वज्रनाथकः । मंगलं रुक्मिणीनाथ मंगलं जीमतिप्रियः ॥७॥ मंगलं गोकुलाधीशो मंगलं देवकी सुतः मंगलं लोक सारज्ञो मंगलं धर्मवर्द्धनः ॥८॥ मंगलं सर्वशास्त्रज्ञो मंगलं साधुवल्लभः ॥९॥ इदं स्तोत्रं महादिव्यं महासंगलकारकम् । व्यासेन कथितं पूर्वमहापातक नाशनम् ॥११॥ यः पठेत्प्रातस्तथायस्नान कालेनरोत्तमः श्रवणं परमेश्वर्यं लभतेनात्र संशयः ॥१२॥ भवेद्ब्रह्मशता युञ्ज्व सर्वरोगविजितः । मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णु लोकं सगच्छति ॥१३॥ इति मंगलीकरणं स्तोत्रं प्रातः नित्यं पाठ्यते मंगलं मयजीवन व्यतितगरेर पापमुक्तं विष्णुलोक अत्यमामिलनेछ ॥

मं. मा. अ. बु. मा. १५ उ.  
 वृ. व. उ. शु. मा. उ. प.  
 श. १७ व. उ. १६ मं. १, २० बु. १



श्री शाके १९०५ श्री संवत् २०४० चैत्र शुक्ल पक्षः (चौलाश्व) पा० अश्विनी (अप्रैल ४) उत्तरायणं वसन्तर्तुः

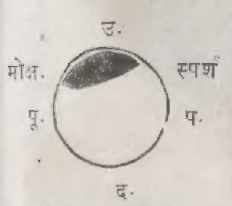
|    |     |     |    |    |    |    |     |     |    |     |    |    |      |      |           |     |     |     |    |             |         |       |           |         |         |            |   |
|----|-----|-----|----|----|----|----|-----|-----|----|-----|----|----|------|------|-----------|-----|-----|-----|----|-------------|---------|-------|-----------|---------|---------|------------|---|
| ग. | वा. | ति. | घ. | प. | न. | घ. | प.  | यो. | घ. | प.  | क. | घ. | प.   | योगः | चन्द्ररा. | दि. | मा. | सू. | उ. | ता.         | b रम्भः | भ.पु. | विश्वध्वज | पातनम्, | वत्सरा. | रम्भः      | g |
| १  | व.  | ११८ | ४५ | अ. | २३ | ४८ | वि. | २२  | ४५ | वा. | ४७ | ४८ | मानस | मे.  | ३१        | ३८  | ५   | ४०  | १४ | चन्द्रोदयः, | आश्वि.  | १     | मेघोदयः   | ७।४४    | (वै.)   | सं.नववर्षा | b |

(१) सं० २०३९ साल को ग्रहण

मार्ग कृष्ण ३० मार्ग ३० गते (१५ दिसम्बर) बुध  
वासरे मूलभेद्यत राशी सूर्य ग्रहण योग स्वल्प (अदृश्य) ।

मार्ग कृष्ण ३० सूर्य ग्रहण

स्पर्शादिकालाः



मध्याह्नोत्तरम्

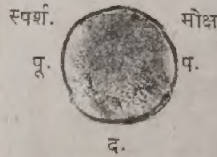
| घं.       | मि. |
|-----------|-----|
| स्पर्शः ३ | ४३  |
| मध्य ४    | २९  |
| मोक्षः ५  | ११  |

ग्रस्तास्तः

(२) मार्ग शुक्ल १५ पौष १५ गते (३० दिसम्बर)

गुरु वासरे चन्द्रग्रहणम् ग्रस्तोदयः खग्रासः  
आर्द्रा नक्षत्रे मिथुन राशी

उ.



मध्याह्नोत्तरम्

| घं.         | मि. |
|-------------|-----|
| स्पर्शः ३   | ३१  |
| सम्मीलनम् ४ | ३८  |
| मध्यः ५     | १   |
| उन्मीलनम् ५ | ३९  |
| मोक्षः ६    | ४७  |
| सर्वपर्वः ३ | १६  |

चन्द्रग्रहण फलम्

मे. ३ श्रीप्रा.

वृ. १० तः

मि. १ वातः

क. १२ व्ययः

सि. ११ लाभः

क. १० सुखम्

तु. ९ मानना.

वृ. ८ कष्टम्

ध. ७ स्त्रीपीडा

म. ६ सौख्यम्

कु. ५ चिन्ता

मी. ४ व्यथा

आर्द्रनिचत्रजाना-

मतिकष्टम्

सूर्यग्रहण फलम्

मान नाशः

कष्टम्

स्त्री पीडा

सौख्यम्

चिन्ता

व्यथाः

श्री प्राप्तिः

क्षतिः

घातः

व्ययः

लाभः

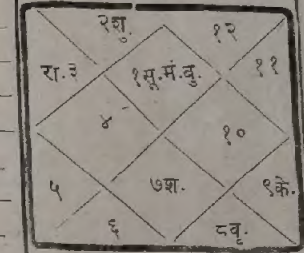
सुखम्

मूलनक्षत्रजाना-

मतिकष्टम्

| १   | सू. | मं. | वृ. | वृ. | शु. | श. | रा. |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|-----|
| वै. | ०   | ०   | ०   | ७   | १   | ६  | २   |
| १   | ०   | ११  | १६  | १८  | ८   | ८  | ४   |
| ग.  | ०   | २७  | ८   | ५   | ७   | १  | ९   |
| ५   | ०   | ४०  | ५   | ८   | ४   | २  | ४   |
| ७   | ५   | ८   | ४   | ४   | ८   | ३  | ७   |
| ४   | ४   | ४   | ०   | ३   | ९   | ४  | ८   |

१ सू. १



४ तैलाम्यङ्गम् तिम्वपत्रप्राशनम्  
(चोवाहान्धवं)  
मं. मा अस्त  
वृ. मा उदयः  
वृ. व. उदयः  
शु. मा. उ. पश्चिम  
श. व. उ.

सूर्यग्रहणमा, ४ प्रहर, चन्द्रग्रहणमा ३ प्रहरपर्वदेखिभोजनादि गर्त निषेधल तर रोगी, बालक, बुद्धलाई निषेध छैन

नीलवस्त्र महिषो (भैंसी) सून दान जप २३००० प्रीपल पूजा । राहु को दान मासगहत तिलतल खड्ड नीला  
वस्त्र भेडो सुनदान जप १८००० भैरव पूजा । केतुको निमित्तमा मास तिल तेल नुन कालो वस्त्र कंबल वैदूर्य  
मणि दान जप ७००० भैरव पूजा मुंथा र योगिनी दशाको निमित्तमा ध्यु मह चिनी ताछ पात्र ३ पादुर्क पगसुन  
दान जप २७००० भगवती पूजा कन्या कुमारी भोजन गराउनु । ग्रहको निमित्त ब्राह्मण भोजन रुद्री चण्डीपाठ  
पूटि गराउनु योग्य छ । श्रावण संक्रांतिमा लूतनि क्षेपण मन्त्रः—कण्डारकरात्रिचर लूताई भयनाशन । उल्कामिमां प्रक्षिपामिमास्तु लूताभयंचनः ।  
कण्डारक रात्रि चर गृहाणदीप मुत्तमम् सरलेन्धन संभूतं ममारिष्टं विनाशयः ॥